परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-दाता

(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 57, अंक 2, मई, 2021
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

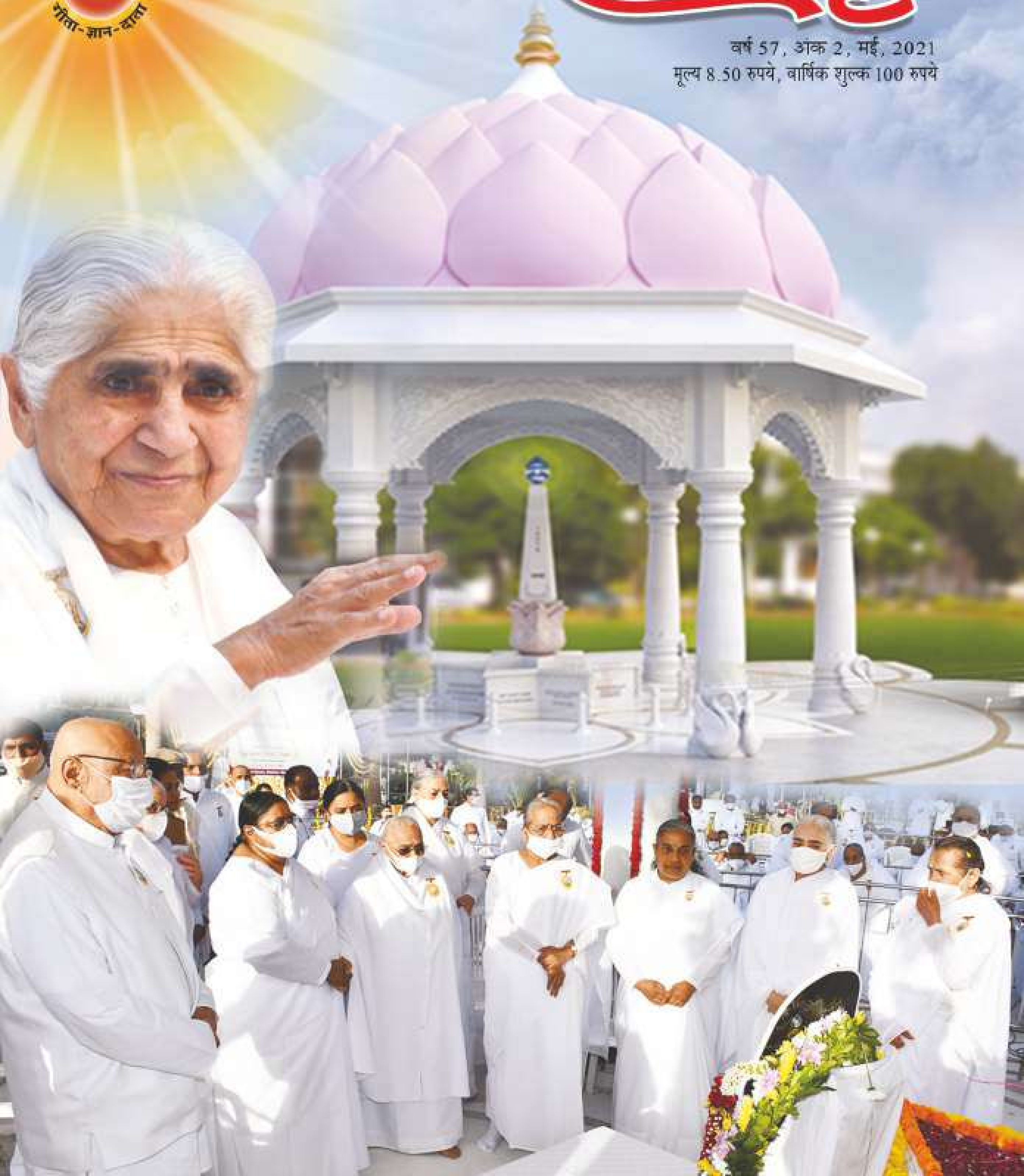

सिक्किम- महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए सिक्किम के मुख्यमंत्री भ्राता प्रेम सिंह तमांग, श्रीमति तमांग, ब्र.कु. सोनम बहन, ब्र.कु. हरीश भाई तथा अन्य।

बाकीचौकी (मंडी)- हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता जयराम ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दक्षा बहन।

आगरा (आर्ट गैलरी)- केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मधु बहन तथा ब्र.कु. माला बहन।

भुवनेश्वर (आदिमाता कॉलोनी सेंटर)- उड़ीसा विधानसभाध्यक्ष भ्राता सूर्यनारायण को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मंजू बहन। साथ में ब्र.कु. विजय भाई तथा अन्य।

सारनाथ, वाराणसी- आध्यात्मिक ज्ञान-चर्चा के पश्चात् कैबिनेट मंत्री भ्राता अनिल राजभर जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. विपिन भाई, ब्र.कु. रेखा बहन तथा ब्र.कु. सरिता बहन।

दुमका- झारखंड के कृषिमंत्री भ्राता बादल पत्रलेख को ईश्वरीय सौगात देते ब्र.कु. जयमाला बहन।

मन का भोजन है मुरली

■■■ दादी हृदयमोहिनी

शुभ भावना और शुभ कामना ये शब्द बाबा बार-बार बोलते हैं। शुभ भावना, शुभ कामना हमारी नेचुरल लाइफ हो जानी चाहिए। जितना हम विशेषता देखने की आदत बनायेंगे, उतनी माया कम आयेगी। जब किसी के प्रति घृणा दृष्टि होती है, तब व्यर्थ विचार चलते हैं। इसीलिए बाबा कहते हैं कि अवगुण देखेंगे ही नहीं तो व्यर्थ संकल्प चलेगा ही नहीं। विशेषता देखेंगे तो संकल्प भी शुभ चलेंगे। किसी भी कमज़ोर को शुभ भावना, शुभ कामना का सहयोग दो तो आपका पुण्य जमा होगा।

अपनी कंट्रोलिंग और रूलिंग पावर बढ़ाओ। वो पावर बाबा की याद से मिलनी है।आप चेक करके देखो सारा दिन क्या याद रहता है? मेरा काम, मेरा संबंध, मेरा शरीर, मेरा-मेरा ही याद रहता है, चलो मेरा बाबा भी कहो तो भी मेरा ही याद आया ना, और तो कुछ याद नहीं आता। तो मेरा-मेरा कहने वाला मैं राजा हूँ, यह नहीं भूलना चाहिए। बाबा कहता है – अभी समाप्ति का समय समीप आ रहा है। फरिश्ता बनकर फिर देवता बनना है तो यह भी चेक करो कि हम फरिश्ते बने हैं? यह भी चेक करो कि हम राजा बने हैं? फरिश्ता बनना बहुत सहज है। सिर्फ अपना बोझ अपने ऊपर न रख करके बाबा को दे दो, बस। यह वेस्ट थॉटस, वेस्ट बोल यही बोझ है। बाबा कहते, यह बोझ क्यों उठाते हो? वेस्ट को बेस्ट में क्यों नहीं बदल देते हो?

बाबा हमेशा कहता है, सवेरे का क्लास करना सबसे अच्छा है। सवेरे-सवेरे मन को ज्ञान के मनन का भोजन खिलाना चाहिए। मन का भोजन है यह मुरली। नहीं तो खाली मन शैतान का घर कहा जाता है। मन को मनन से भर लो, वेस्ट बेस्ट में बदलता जायेगा। मुरली सुनना माना उसमें जो बाबा ने कहा वो करना है, सिर्फ पढ़ना नहीं है, उससे फायदा उठाना है। मन को शुद्ध भोजन दिया तो मन ताकत वाला बन जाना चाहिए। मुरली से इतना प्यार हो, तब बाबा कहेगा, मेरे से भी प्यार है क्योंकि बाबा का प्यार मुरली से है और आपका प्यार बाबा से है तो बाबा का जिससे प्यार है उससे आपका तो होना चाहिए। तो इतना बाबा से प्यार, बाबा के महावाक्यों से प्यार हो जिसको बाबा कहते हैं – श्रीमत।

अमृतवेले से लेकर बाबा ने हर कर्म की श्रीमत दे दी है। सहजयोगी बनना हो तो हर कर्म श्रीमत प्रमाण करते चलो। आँख से क्या देखो, मुख से क्या बोलो, बाबा ने सब डायरेक्शन दिया है। जो बाबा ने कहा है वो सिर्फ चेक करो। अच्छा, मैं जो बोल रही हूँ, जो बाबा के बोल हैं वही बोल रही हूँ? देखने के लिए बाबा का जो डायरेक्शन है, वही देख रही हूँ या शरीर को ही देख रही हूँ? फिर तो बस बेफिकर, मंजिल पर पहुँच ही जायेंगे।

■■■

अमृत-सूची

- मन का भोजन है मुरली 3
- वो एक दिव्य अलौकिक आत्मा थीं (सम्पादकीय) 4
- दादी गुलज़ार सदैव हल्की और ड्रामा पर कायम रहती थी 6
- सादगी और भोलेपन की मूर्त दादी गुलज़ार 7
- दादी हृदयमोहिनी बाबा की एकदम क्लियर इंस्ट्रूमेंट थी 9
- गुलजार दादी जी गम्भीर के साथ-साथ रमणीक भी थी 11
- संकल्प और बोल की एनर्जी को बचाकर, भगवान को समर्पित करने वाली आदरणीया दादी गुलज़ार 14
- दादी हृदयमोहिनी ने सेवाकेन्द्र को शीतलता का कुंड बनाकर रखा 17
- दादी ने अन्त में चित्र और चरित्र से सेवा की 19
- दादी हृदयमोहिनी जी हर बात को सकारात्मक रूप से लेते थे 22
- कैसे कह दूं वो नहीं रहे (कविता) 24
- गुलजार दादी नम्बरवन संदेशी थी 25
- दादी हृदयमोहिनी बहुत अंतर्मुखी और नम्रचित्त थी 27
- अनेकों से मिलते भी दादी हृदयमोहिनी सदा न्यारी-प्यारी रहती थी 29
- सचित्र सेवा-समाचार 30
- शिव हृदय स्वामिनी: दादी हृदयमोहिनी जी 32
- दादी जी ने दिल के सब संशय दूर कर दिए 34

सम्पादकीय . . .

वो एक दिव्य अलौकिक आत्मा थीं

संसार में आना और एक दिन सबको अलविदा कर संसार से चले जाना, ये एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसलिए कहा गया है कि आया है सो जायेगा राजा, रंक, फकीर। आना और जाना वैसे तो लगा रहता है परन्तु कुछ लोग अपने श्रेष्ठ कर्मों द्वारा, अपने आचरण व्यवहार से लोगों के मन में युगों-युगों तक अमर हो जाते हैं। ऐसी ही एक महान विभूति थीं हम सबकी प्यारी आदरणीया दादी गुलज़ार जी।

जैसा नाम वैसा स्वभाव

किसी शायर ने कहा है -- मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मर्तबा चाहे कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलज़ार होता है। दादी गुलज़ार अपने नाम के अनुरूप थीं। जो भी उनसे मिलता वो फूलों की तरह खिल उठता था। उनका एक और नाम था हृदयमोहिनी। सच में सबके हृदय को मोह लेतीं थी। उन्हें देखकर ही अथाह आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव होता था। उनके बोल सुनकर मन आनंद और उमंग-उत्साह से भर जाता था। उनका चलना, देखना, दृष्टि देना, बात करना सब कुछ निराला और दिव्य था। उनका हर कर्म अलौकिक था। सबके दिल को जीतने वाली दादी गुलज़ार सबसे न्यारी और सबकी प्यारी थीं। दिल इतना विशाल जिसमें सारा विश्व समा जाये।

बाबा उन्हें याद करते थे

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है। परमात्मा को प्राय: सभी याद करते हैं परन्तु दादी जी उन चन्द हस्तियों में थीं जिन्हें स्वयं परमात्मा याद करते थे। दादी जी वो भाग्यशाली आत्मा थीं जिनके रथ को स्वंय परमात्मा ने अपना रथ बनाया और जिस रथ के माध्यम से अनेकों आत्माओं को ज्ञानामृत का पान करा कर उनके भाग्य को संवारा।

उनकी दृष्टि बहुत रूहानी थीं

खूबसूरती नज़रों को आकर्षित करती है, लेकिन व्यक्तित्व दिल जीत लेता है। आदरणीया दादी जी से मेरी पहली मुलाकात 1957 में रजौरी गॉर्डन में हुई। मैं और लक्ष्मण भाई साकार बाबा से मिलने दिल्ली गये थे। उन दिनों बाबा रात्रि क्लास में सबसे मिलते थे परन्तु उस दिन बाबा किन्हीं कारणों से क्लास में नहीं आये थे। जब हम वहां पहुंचे तो दादी गुलज़ार जी क्लास करा रही थीं। उनका ज्ञान सुनाने का तरीका बहुत ही मनमोहक था एवं वाणी भी बहुत मधुर थी। क्लास के बाद योग में जैसे ही दादी जी ने मुझे दृष्टि दी, मैं अपने आप को शरीर से अलग महसूस करने लगा। लगा जैसे मेरा शरीर है ही नहीं, एकदम हल्का महसूस कर रहा था। आज भी मुझे वो दिव्य अलौकिक दृष्टि याद है जिसने मुझे पहली बार अशरीरीपन का अनुभव करा दिया था।

दूसरी बार मेरी मुलाकात दादी जी से कमला नगर में हुई जहाँ बाबा ने मुझे जगदीश भाई जी के पास सेवा के लिए भेजा था। उसके बाद दादी जी से मिलना, उनसे ज्ञान सुनना, उनकी दृष्टि लेना, ये सौभाग्य बार-बार मुझे मिलता रहा। दादी जी स्वयं भी ज्ञान-योग में रुचि रखती थीं तथा अन्य सभी को भी ज्ञान-योग में मन लगाने के लिए प्रेरणा देती रहती थीं। दादी जी एक अच्छे वक्ता के साथ-साथ बहुत अन्तर्मुखी रहती थीं। उनका रहन-सहन बहुत

ही साधारण था परन्तु उनका व्यक्तित्व बहुत ही रॉयल एवं प्रभावशाली था। दादी जी बहुत कम बोलती थीं परन्तु कम शब्दों में ज्ञान की बहुत ही गहरी बातें करतीं थी।

दिव्य गुणों की मूर्त थीं

जिन्दगी एक आइना है, ये तभी मुस्कुराएगी जब हम मुस्करायेंगे। दादी जी के व्यक्तित्व में दिव्य गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे। उनके प्रत्येक कर्म में दिव्यता, धैर्यता, मधुरता, शालीनता एवं अलौकिकता झलकती थी। एक बार हापुड़ में कुछ लोगों द्वारा आश्रम को क्षति पहुंचाने का प्रयास किया गया। एक भारी भीड़ इकट्ठी होकर भाई-बहनों को परेशान कर रही थी, हाथापाई भी कर रहे थे। बाबा ने दादी गुलज़ार जी को वहां भेजा। दादी जी ने बड़ी सहजता एवं सरलता से सबको शान्त किया एवं वातावरण को ठीक कर दिया। दादी जी में साकार बाबा की झलक दिखाई देती थी एवं कैसी भी परिस्थिति हो वो उसे शालीनता के साथ सुधार देती थीं। दुनिया की हर परेशानी उनकी हिम्मत और सरल स्वभाव के आगे घुटने टेक देती थी।

शिक्षा भी बहुत प्यार से देती थीं

एक बार मैं दादी जी को दिल्ली, पाण्डव भवन से दिल्ली, कृष्णानगर गाड़ी में बैठा के ला रहा था। गाड़ी मैं चला रहा था तो मन में उमंग आया और मैं गाडी तेज चलाने लगा। रास्ते में कहीं-कहीं भीड़ थी जिससे एकदम से ब्रेक लगाना पड़ता था। दादी जी ने बड़े प्यार से, सरलता के साथ कहा, आत्म भाई, धीरे-धीरे चल कर भी हम लोग कृष्णानगर पहुंच जायेंगे। मैं दादी जी का इशारा समझ गया और गाड़ी धीरे चलाने लगा। दादी जी कहती थीं कि तन को जितना चलाओगे उतना मज़बूत होगा परन्तु मन को जितना शान्त रखोगे मन उतना मजबूत होगा।

बाबा पर अटूट विश्वास था

दादी जी को बाबा पर अटूट विश्वास था। वो कहती थी कि जब बाबा बैठा है चिन्ता करने के लिए फिर हम क्यों चिन्ता करें। एक बार दिल्ली में रामलीला मैदान में मेले का आयोजन किया गया था। सभी भाई-बहनें उमंग-उत्साह से सेवा में लगे हुए थे मेला सजाने में। उन्हीं दिनों रशिया के राष्ट्रपति भारत में आने वाले थे एवं श्रीमति इन्दिरा गांधी चाहती थीं कि उनका प्रोग्राम रामलीला मैदान में रखा जाये। ये सुनकर सभी भाई-बहनें चिन्तित हो गये कि अब क्या होगा। सब बहुत घबाराये हुए दादी जी के पास गये और उन्हें सारा वृतांत सुनाया। सब सुनने के बाद दादी जी ने बड़ी ही सहजता से सबको कहा कि सब बाबा को याद करो, बाबा सब ठीक कर देगा। कुछ भाई-बहनें सोचने लगे कि इतनी बड़ी मुसीबत आई है और दादी जी को ज़रा भी चिन्ता नहीं हो रही है। दादी जी की बात मान सब योग में बैठ गये। सरकार की ओर से कुछ लोग उस स्थान का निरीक्षण करने आये थे। सबको योग में बैठा देख वो लोग वापस चले गये और उन्होंने रामलीला मैदान में प्रोग्राम करने का विचार त्याग कर लालकिला मैदान में प्रोग्राम बनाया। इस प्रकार बाबा ने समस्या का समाधान कर दिया। दादी ने सबको कहा, देखा, बाबा बैठा है न चिन्ता करने के लिए।

दादी जी का वरदान आज भी मेरे साथ है

सन् 1992 में प्रिंटिंग प्रेस दिल्ली से शान्तिवन लायी गई। उस समय एक ही मशीन लग पाई थी जिसका उद्घाटन गुलज़ार दादी जी ने अपने हस्त कमल से किया था। उद्घाटन के पश्चात् दादी जी ने मुझसे कहा, आत्म, आप जो चाहते हो वो पूरा हो ही जाता है। इच्छा मात्रम् अविद्या का वरदान दादी जी ने मुझे दिया था। उनका वो वरदान आज भी मेरे साथ है और हर कार्य बड़ी ही सहजता से हो जाता है।

आज भी जब मैं दादीजी को याद करता हूँ तो उनका वो दिव्य रूहानी व्यक्तित्व, वो अलौकिक दृश्य मेरी आँखों के सामने आ जाता है। उनके अव्यक्त बायब्रेशन को मैं स्पष्ट महसूस करता हूँ और उनके जैसी अखण्ड तपस्विनी, पालनहार, बापसमान अलौकिक फरिश्ते के साथ बिताये लम्हों को याद करके अत्यन्त हर्षित एवं खुश होता हूँ तथा अपने आप को भाग्यशाली समझता हूँ। ■■■

दादी गुलजार

सदैव हल्की और ड्रामा पर कायम रहती थी

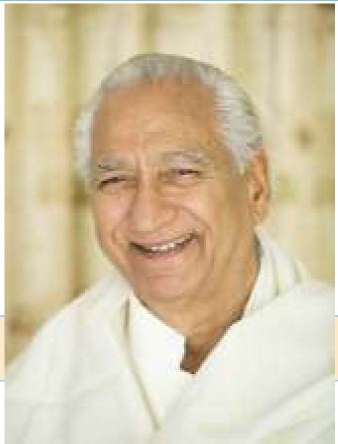

■■■ ब्रह्माकुमार निर्वैर, शान्तिवन

मैं जब से ज्ञान में आया तब से समय प्रति समय परम आदरणीया दादी गुलजार जी से मिलना होता रहा, उनकी क्लासेज और संदेश सुनते रहे।

बापदादा केवल भारत के लिए नहीं परंतु समस्त विश्व के लिए हैं

साकार बाबा 18 जनवरी, 1969 को अव्यक्त हुए तो जीवन में खालीपन महसूस हो रहा था लेकिन 21 जनवरी, 1969 को अव्यक्त बापदादा का जो पार्ट दादी जी द्वारा चला, उसने हमें यह महसूस करा दिया कि बापदादा अभी भी यहीं हैं और हमें मार्गदर्शन करते, श्रीमत देते रहेंगे। हम सबने देखा कि कैसे अव्यक्त बापदादा ने गुलज़ार दादी द्वारा एक-एक की व्यक्तिगत पालना की, ज्ञान की गहराइयों में ले गए, दिव्य गुणों की महानता तथा शक्तियों की महानता बताई। उनके द्वारा अव्यक्त बापदादा मिलन में, बापदादा हर एक से नयन मुलाकात करते और व्यक्तिगत उन्नति के लिए मार्गदर्शन करते रहे। कलयुग का अंतिम समय है, 84वें जन्म का भी अंतिम समय है और आत्माओं में भी कितनी कमजोरी है, यह हम सब जानते हैं। ऐसे समय पर बाबा ने एक-एक आत्मा को कैसे दादी जी द्वारा हिम्मत दिलाई, साथ ही बहुत सहज भाषा में मार्गदर्शन किया कि जीवन को अति श्रेष्ठ बनाने के लिए क्या करना है। दादी जी के रथ द्वारा बापदादा के अव्यक्त मिलन में विदेशियों का भी आना शुरू हुआ तो यह प्रैक्टिकली सिद्ध हुआ कि बापदादा केवल भारत के लिए ही नहीं परंतु समस्त विश्व के लिए हैं। बापदादा ने गुलजार दादी द्वारा अनेकानेक सेवाएं की, हृदयस्पर्शी बातें सुनाई कि सब के प्रति शुभभावना रखनी है, सहयोग की भावना रखनी है आदि, आदि।

जो बीता सो बीता, अब आगे बढ़ो

दादी कभी किसी की कोई बात अपने चित्त पर नहीं रखती थी। किसी ने कोई कमी-कमजोरी की बात सुनाई भी तो उसको बहुत प्यार से दृष्टि देती, हाथ में हाथ लेकर के बड़े प्यार से कहती, 'अब सब ठीक हो जाएगा, सब अच्छा हो जाएगा, आप अभी बिल्कुल निश्चिंत हो जाओ।' किसी के मन में यदि बोझ भी होता तो एक सेकंड में दादी के मिलन के फलस्वरूप वह सहज ही हल्का महसूस करता था। ईश्वरीय सेवाओं में दादी का महत्वपूर्ण योगदान तो हम सभी जानते ही हैं। दिल्ली राजधानी होने के नाते सरकार की सेवा, अपने भाई-बहनों की सेवा की जिम्मेवारी दादी पर थी परंतु उन्हें कभी जिम्मेदारियों का बोझ नहीं महसूस हुआ। सदैव हल्की रहती थी। ड्रामा पर सदा कायम रहती थी और सब को प्यार से यही कहती, 'जो बीता सो बीता, अब आगे बढ़ो।'

अगर हमारा बाबा वाली दादी से दिल से प्यार है, तो दादी जी की महीन से महीन शिक्षाओं को हम अपने जीवन में धारण करें। दादी जी सबसे बहुत प्रेम से मिलती थी, बच्चे उनको याद करते हैं और बड़े भी उनको याद करते हैं। यही निशानी है बाप समान बनने की। वे हमें भी यह लक्ष्य दे गई कि हमें भी उनके नक्शे कदम पर चलना ही है। ■■■

सादगी और भोलेपन की मूर्त दादी गुलजार

ब्रह्माकुमार बृजमोहन भाई, शान्तिवन

हम में से अधिकतर भाई-बहनें वे हैं जिन्होंने शिवबाबा को गुलज़ार दादी के रथ के द्वारा जाना और उन लोगों की संख्या कम है जिन्होंने शिवबाबा को ब्रह्माजी के रथ के द्वारा जाना। जब शिवबाबा ब्रह्माजी के रथ में आते थे तो पता नहीं लगता था कि इस वक्त शिवबाबा बोल रहे हैं या ब्रह्माबाबा बोल रहे हैं। शिवबाबा 24 घन्टे रथ में नहीं रहते थे, ज्ञान सुनाने आते थे या जब-जब आवश्यकता होती थी तब आते थे। शिवबाबा को ब्रह्माबाबा पर इतना फ़खुर था कि ब्रह्माबाबा कभी गलती नहीं कर सकते, तो ब्रह्माबाबा जो कुछ भी कहे तो शिवबाबा जिम्मेवार है।

बाबा ने 18 जनवरी, 1969 के बाद नया रथ लिया। कोई सोच भी नहीं सकता था कि शिवबाबा पहले ब्रह्माबाबा के मेल (पुरुष) शरीर में आये, उसके बाद गुलज़ार दादी के फीमेल (स्त्री) शरीर में आयेंगे, इसका भी कुछ रहस्य था। फीमेल शरीर के अंदर बापदादा को देख रहे हैं तो शरीर का भान सहज ही निकल जाता था जो अव्यक्त बनने में मदद करता है।

आपसी व्यवहार में बिल्कुल भी लौकिकता नहीं देखी

गुलज़ार दादी और दादी की अलौकिक माता (ऑलराउंडर दादी) और मौसी (रुक्मणी दादी) भी दिल्ली में रहती थीं। रुक्मणी दादी, राजौरी गार्डन में रहते थे परन्तु ऑलराउंडर दादी और गुलज़ार दादी दोनों पांडव भवन में रहती थीं। हमने कभी उनके आपसी व्यवहार में बिल्कुल भी लौकिकता नहीं देखी। सबसे बड़ी बात कि दादी जी में बहुत सादगी, बहुत भोलापन था। उन्होंने लौकिक सम्बन्धों का ज्ञान ही नहीं रखा हुआ था।

दादी जी का भोलापन

एक बार राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल जी ने ओ. आर. सी. (दिल्ली ज़ोन) में आना स्वीकार किया। पूरा स्टेज वी.आई.पीज़ से भरा हुआ था। जब दादी जी ने भाषण किया तो कहा कि 'भारत की प्रधानमंत्री प्रतिभा पाटिल जी आई हैं' जबकि वे थीं राष्ट्रपति। यदि कहीं और किसी प्रोग्राम में कोई ऐसा बोल देता तो बहुत बड़ी हलचल हो जाती लेकिन दादी जी का भोलापन था कि ऐसा भी कोई व्यक्ति हो सकता है जिसे भारत के राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री में अन्तर का ज्ञान ना हो। तो सभी ने हल्का मुस्करा दिया और बात वहीं समाप्त हो गई।

दादी जी के आने से अतिरिक्त उमंग-उत्साह की प्राप्ति

पांडव भवन फस्ट फ्लोर में दादी जी रहती थीं। कभी बाहर से कोई बारात आदि गुजरती तो दादी जी आगे आकर बच्चों की तरह उस बारात को देखती थीं। फिर हम उनसे पूछते थे तो वे कहतीं कि 'सतयुग में कैसा होता है और यहाँ कैसा होता है', यह देख रही हूँ। हम ऑफिस में काम कर रहे होते, वहां आ जातीं, देखती थीं, हम क्या कर रहे हैं और उनके जाने के बाद हमें कुछ अतिरिक्त उमंग-उत्साह की ताकत महसूस होती थी। लोग कहते थे, तुम्हारा ईश्वरीय ज्ञान है तो इसका पुस्तक कहां है? तो जगदीश भाई जी जिन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं, उन्होंने जहाँ भी इस दुनिया और उस दुनिया के ज्ञान का मिलान करना होता था तो उसमें वे गुलज़ार दादी से पुछवाते थे।

दादी जी ने भर दी आध्यात्मिक शक्ति

जब ज्ञानी जैल सिंह जी पंजाब के मुख्यमंत्री थे तब से हमारा उनसे मिलना-जुलना होता था। फिर जब वे दिल्ली में गृहमंत्री बने तो हम उन्हें कहते थे, 'एक बार माउंट आबू

हम क्या सोचते हैं, क्या जानते हैं और क्या मानते हैं, ये खास मायने नहीं रखता, मायने रखता है, हम क्या करते हैं?

आइये', तो वे कहते थे कि अब मैं अपने सचिवों के अधीन हो गया हूँ, वे जैसा कहते हैं वैसा करना पड़ता है। फिर वे भारत के राष्ट्रपति बन गए। हमने उनसे टाइम लिया और दादी गुलज़ार जी को साथ लेकर मिलने गए। हमने उनसे कहा, कुछ समय साइलेंस में बैठेंगे। उन्होंने सेक्रेटरी को कहा कि कोई अंदर ना आए, मैं शांति में बैठ रहा हूँ। फिर हम सब साइलेंस में बैठ गए। हमने देखा कि आधे मिनट के अंदर ही वे बिल्कुल शांति में गुम होकर बैठ गए। तीन मिनट हो गए, चार मिनट हो गए, पाँच मिनट हो गए, हम सोच रहे थे कि उनकी साइलेंस पूरी हो तो हम उनसे अपनी बात शुरू करें। फिर हमने इशारा किया और बात शुरू की, निमंत्रण दिया कि आपको माउंट आबू आना चाहिए, अब तो आप राष्ट्रपति हैं, आप चाहें तो आ सकते हैं। तो दादी जी ने जैसे उनमें आध्यात्मिक शक्ति भर दी और वे प्रथम राष्ट्रपति थे जो मधुबन आए।

दादी जी की रूहानियत का प्रभाव

सन् 1994 में ब्रह्माबाबा का डाक टिकट तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा जी द्वारा राष्ट्रपति भवन से रिलीज़ करने की सारी तैयारी हो चुकी थी। आमतौर पर जो स्टैम्प निकलती है उसमें व्यक्ति के नाम के साथ उसकी जन्म तारीख और मृत्यु की तारीख भी लिखी होती है। साथ ही एक फोल्डर होता है जिसमें उस व्यक्ति की संक्षिप्त जीवनी लिखी होती है। परंतु शिवबाबा ने उन लोगों की बुद्धि को ऐसे टच किया जो प्रजापिता ब्रह्मा के नाम से सरकार ने डाक टिकट निकाली और साथ में जो फोल्डर था उसमें भी प्रजापिता ब्रह्मा लिखा, ना कि दादा लेखराज, तो यह अपने आप में एक बहुत बड़ी बात थी। हमने तय किया कि स्टैम्प लॉन्च होने के दूसरे दिन भिन्न-भिन्न प्रांतों में भी इसके सैलिब्रेशन फंक्शन करेंगे। इस सिलसिले में मुंबई में रमेश भाई और उषा बहन जी वहां के गवर्नर, मिस्टर एलेग्जेंडर से मिलने गए। उन्होंने ठीक तरह से तारीख नहीं देखी जिस कारण उन्हें गलतफहमी हो गई और उन्होंने राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा जी को फोन करके कहा कि ये आप (राष्ट्रपतिजी) से भी स्टैम्प लॉन्च करा रहे हैं और हम से भी यहां लॉन्चिंग करने के लिए कह रहे हैं, जोकि नियमानुसार नहीं है। इस कारण से राष्ट्रपति जी ने रिलीज़ करने से दो दिन पहले मना कर दिया। हमने राष्ट्रपति जी से मिलने का समय मांगा और दादी गुलज़ार जी को साथ लेकर राष्ट्रपति जी से मिले। उन्होंने देखा कि साथ में बी.के. बहनजी आयीं हैं। दादी जी ने कहा, बाबूजी, आपको हमारा काम जरूर करना है, तो वे मुस्कराने लगे और बताने लगे कि हमें भी नियम से चलना पड़ता है। हमने कहा, यह हमारा सैलिब्रेशन का निमंत्रण पत्र है, आप देख लीजिए, हमारा सैलिब्रेशन उसी दिन नहीं, अगले दिन है, तो उन्होंने कार्यक्रम को बड़े स्नेह से ओके कर दिया। हमने देखा कि यह दादी जी की रूहानियत का ही प्रभाव था।

सबके प्रति स्नेह की भावना

दिल्ली की मुख्य सेवाओं में दादी जी का बहुत हाथ रहा। गुलज़ार दादी की धारणा प्रबल थीं। धारणा के आधार पर वे थोड़े से शब्द बोलती थीं और सफलता मिल जाती थी। उनके पास लोग खिंचे चले आते थे। दादी जी के चेहरे की फ़लक और महक सेवा करती थी। उनके शब्द नपे-तुले, नम्रतापूर्ण होते थे। उनके मन में सबके प्रति स्नेह की भावना थी। वह सभी को बहुत सम्मान देती थीं। कभी दादी जानकी जी और गुलज़ार जी एक ही प्लेन से आते थे तो गुलज़ार दादी यदि पहले व्हीलचेयर पर प्लेन से उतर जाती थीं तो जानकी दादी का इंतजार करती थीं। दोनों साथ-साथ ही बाहर आते थे। कभी जानकी दादी जी दिल्ली आते थे तो उन्हें रिसीव करने के लिए दादी स्वयं एयरपोर्ट पर जाते थे।

सूक्ष्म रूप में बाबा, दादी जी सदा हमारे साथ हैं

ब्रह्माबाबा कहा करते थे कि अभी तो मुझसे कोई भी मिल लेता है। धारणा पर पूरे ना चलने वाले भी मिल लेते हैं और बाबा को मिलना पड़ता है लेकिन एक दिन आएगा जो कोई अपवित्र मुझे छू भी नहीं सकेगा। हम सोचते थे, ऐसा कैसे होगा। फिर बाबा अव्यक्त हो गए। उनको अब कोई मिल नहीं सकता, जब तक संपन्न-संपूर्ण पवित्र बनने के एम ऑब्जेक्ट वाला ना हो। दादी जी का भी ऐसा ही हुआ। दादी जी फरिश्ता थीं, शरीर पुराना हो चुका था। अभी हम उनसे अव्यक्त होकर ही मिल सकते हैं। यह ड्रामा का दृश्य बताता है कि बहुत बड़ा परिवर्तन अब आएगा जिससे संपन्नता-संपूर्णता समीप आएगी। हमें भी यह दृश्य देखकर के समेटना है, एवररेडी बनना है। सूक्ष्म रूप में बाबा सदा हमारे साथ हैं। दादी जी भी हमारे साथ हैं। ■■■

दादी हृदयमोहिनी बाबा की एकदम क्लियर इंस्ट्रूमेंट थी

ब्रह्माकुमारी जयंती बहन, लंदन

दादी के साथ बहुत अनुभव रहे पर विशेष अनुभव यह रहा कि जब दादी को देखते थे तो बाबा की ही याद आती थी। दादी एक बार लंदन आए थे, तो बड़े प्यार से दादी ने कहा था कि 'जब मैं आप लोगों से मिलती हूँ तो आप मुझे नहीं देखते हो, शिवबाबा को ही देखते हो और मुझे भी बड़ी खुशी होती है कि आप मुझे नहीं, शिवबाबा को देखते हो।' दादी की इतनी नम्रता जो दादी अपने को गायब कर लेते थे। ब्रह्माबाबा सदा यही कहते थे कि मुझे नहीं, शिवबाबा को ही देखो, उसी तरह दादी जी खास अंडरलाइन कराती थी कि मुझे नहीं, शिवबाबा को ही देखो। अव्यक्त बापदादा का रथ होते दादी का खुद का पुरुषार्थ तो रहा ही। दादी किसी भी बात में रिएक्ट नहीं करती थी। बापदादा मुरली में जो शिक्षाएँ देते हैं, दादी के जीवन में उन्हें प्रैक्टिकल में देखते थे जैसे बिल्कुल बाबा के संग का रंग लग गया हो। खास इतनी शांति की शक्ति की स्थिति, बाबा की याद की शक्ति की स्थिति, कई प्रकार से अनुभव हैं।

दादी की सकारात्मकता और शान्ति की स्थिति

एक बार दो सप्ताह में दादी ने पाँच देशों की यात्रा की, ऐसे यात्रा करना किसी जवान व्यक्ति के लिए भी सहज बात नहीं होती है। अलग-अलग भोजन, अलग-अलग लोग, अलग-अलग भाषाएं, कितनी प्रकार की बातें आती हैं। दादी को संकल्प था कि जहां भी बाबा के स्थान बने हुए हैं वहां पांव रखकर के उन आत्माओं की सेवा करूं, समीपता की भासना दूँ। पहले यात्रा में फ्रांस का प्रोग्राम था। वहां सरकार की तरफ से कुछ रुकावटें आ रही थी। दादी ने संदेश लाया कि आप लोग, सारा फ्रांस देश मिलकर के, सवेरे-शाम टाइम फिक्स करके ऐसी तपस्या कुछ समय तक करो, देश का वातावरण बदली करो। वहां कुछ ऐसे कायदे-कानून बन गए थे जो ब्रह्माकुमारियों को वहां हॉल लेना ही संभव नहीं था परंतु छह मास के बाद उन्होंने शुभ समाचार दिया कि 'अभी वातावरण चेंज हो गया है, हमें छुट्टी मिल गई है, अब हम हॉल भी ले सकते हैं और बड़े-बड़े लोगों से मुलाकात भी हो गई है।' दादी इतना क्लियर इंस्ट्रूमेंट थी जो दादी के द्वारा जो संदेश आता था, यदि कोई उसे एक्यूरेट पालन करे, तो सफलता जादू का खेल बन जाती थी। उन्होंने दोबारा दादी जी को आने का निमंत्रण दिया और दादी जी भी बहुत प्यार से, बहुत खुशी से वहां पहुंची। वहां विदेश के हिसाब से बहुत बड़ी संख्या थी (300)। वहां फ्रांस के और आजू-बाजू के देशों के भी ब्रह्मावत्स पहुंच गए थे, वे दादी से अलग होना ही नहीं चाहते थे। लास्ट दिन भी दादी का क्लास पूरा हुआ तो कोई डांस करे, कोई गीत गाए तो दादी लास्ट मिनट पर एयरपोर्ट के लिए निकले और उस दिन रास्ते पर बहुत जबरदस्त ट्रैफिक था। उस दिन किसी वजह से टिकट की कोई समस्या आ गई। मैं और मेरे साथ जो दो बहनें थी फ्रेंच भाषा जानने वाली, हम एक स्थान से दूसरे स्थान, दूसरे से तीसरे स्थान पर टिकट के लिए, पेरिस के एयरपोर्ट पर भागदौड़ कर रहे थे। बीच में मैंने दादी के पास चक्कर लगाया तो देखा कि दादी बड़े प्यार से वहां बैठे ब्रह्मावत्सों को दृष्टि दे रही हैं, थोड़ी-थोड़ी इंग्लिश बोल रही हैं, बाबा की कुछ बातें सुना रही हैं और वे लोग भी मौज कर रहे हैं। फिर हमें पता चला कि मैं और मेरे साथ वाली लंदन की दो बहनों को टिकट मिल सकती है परंतु दादी और नीलू बहन को नहीं मिल सकती है। हम उन्हें छोड़ कर कैसे जा सकते थे, तो हमने वह टिकट कैंसिल करा दिया। हमें जहां जाना था वह

इटली में एक छोटी-सी जगह थी। मुझे लगा कि अगली फ्लाइट तो दूसरे दिन ही मिलेगी परंतु प्रकृतिजीत दादी के तप से, डेढ़ घंटे के बाद हमें दूसरी फ्लाइट मिली और हम बिल्कुल आराम से उसे पकड़ सके क्योंकि हम एयरपोर्ट पर ही थे। मैंने देखा कि उस समय दादी के चेहरे पर एक सेकेंड के लिए भी कोई फर्क नहीं आया। नहीं तो बीच-बीच में कोई पूछ सकता है कि बताओ, क्या हो रहा है, क्यों नहीं जा रहे हैं, बताओ तो सही। हम बीच-बीच में चक्कर लगाते तो थोड़ा-थोड़ा बताते भी थे पर दादी के चेहरे पर कुछ फर्क नहीं आता था। दादी मुस्कराते थे, शांत स्वरूप थे। पेरिस वालों ने जल्दी-जल्दी दादी जी और हम सब के लिए भोजन भी भेज दिया तो दादी ने प्यार से सब के साथ पिकनिक करके, भोजन करके फिर सभी को छुट्टी दी। उस दिन दादी करीब 7 घंटे एयरपोर्ट पर रही, नहीं तो आमतौर पर दादी का एयरपोर्ट पर आना और जाना होता था। मुझे भी थोड़ा फिक्र हुआ तो दादी ने कहा, तुम सोचो नहीं, इनको एक्स्ट्रा पालना मिलने वाली थी। हर बात में पॉजिटिव सोचना और दादी की शांति की स्थिति का उस वक्त अनुभव हुआ।

बाबा की सेवा में हाजिर प्रकृतिजीत दादी

एक बार टर्की में एक माता का बहुत सुंदर मकान था एक टापू पर और उसकी इच्छा थी कि वह दादी को वहां अपनी नाव पर ले चले और अपनी सहेलियों से मुलाकात कराए। दादी ने भी बहुत प्यार से स्वीकार किया और हम सभी लोग नाव पर चढ़े, जिसमें 10 से ज्यादा लोग नहीं आ सकते थे। दस मिनट के बाद रास्ते में नाव बहुत हिलने लगी, हम दादी को देख रहे थे, दादी बिल्कुल शांत बैठी थी। करीब 10 मिनट तक प्रकृति का यह खेल चला, जैसे हमें दिखाने के लिए कि दादी प्रकृतिजीत है। हम फिर उस स्थान पर सुरक्षित पहुंच गए। वह माता भी घबराई हुई थी कि यह तो उसने बिल्कुल भी सोचा न था। उसने दादी से पूछा, 'दादी, आप ठीक हो? आप क्लास करा सकेंगे? आप सबसे मिल सकेंगे? दादी ने कहा, 'मैं बिल्कुल ठीक हूं, ना मुझे रेस्ट चाहिए, ना कुछ और चाहिए, बस, जिस कार्य के लिए बाबा ने मुझे भेजा है, मैं उसमें हाजिर हूं।'

बाबा की याद में प्रश्नों के सटीक उत्तर

टर्की मुसलमानों का, इजरायल यहूदियों का और ग्रीस ईसाईयों का देश है। इन सभी स्थानों की न सिर्फ भाषा अलग बल्कि धर्म भी अलग हैं परंतु दादी ने हर एक स्थान में ऐसी भासना दी जो उन्हें बाबा के और नजदीक ले आई। जेरूसलम में जहां तीन धर्मों – मुसलमानों, यहूदियों, ईसाईयों के यादगार स्थान एक माइल के अंदर पास-पास बने हैं वहां के इंटरफेथ आर्गेनाईजेशन संगठन के मुख्य अपनी पत्नी के साथ एक बार मधुबन होकर गए थे। वे दादी जानकी जी से मिले थे और इस बार दादी गुलजार जी का प्रोग्राम उन्होंने वहां खुद ही रखा था। उस सभा में तीन धर्मों वाले इकट्ठे बैठे थे। दादी ने न केवल शांति के ऊपर भाषण किया परंतु लोगों को शांति की महसूसता भी हो रही थी, वातावरण बहुत ही शक्तिशाली था। एक व्यक्ति के मन में कुछ बात चल रही होगी तो उसने उसके समाधान हेतु दादी जी से प्रश्न पूछा कि ओसामा बिन लादेन के लिए हम क्या सोचें, एक तरफ तो वह कहता है कि भगवान के नाम पर मैं यह सब कर रहा हूं और दूसरी तरफ इतनी दुर्घटनाएं हो रही हैं उसके कारण, तो हमें क्या सोचना चाहिए? दादी जी जानती थी कि यहां तीन धर्म वाले लोग बैठे हैं, इससे ज्यादा हमने कुछ उन्हें बताया नहीं था। दादी ने बड़े प्यार से, शांति से विचार किया बाबा की याद में, फिर उत्तर दिया कि 'हम यह नहीं सोचते कि यह क्या कर रहा है, क्या उसका नतीजा है, हम यह सोचते हैं कि हर आत्मा को परमात्मा की शांति की किरणें मिलें ताकि हर आत्मा को पता चले कि मुझे अब क्या करना चाहिए।' सारी सभा शांत हो गई। दादी का बाबा के साथ संबंध इतना घनिष्ठ, इतना गहरा था जो बाबा बोल रहे हैं या दादी बोल रही हैं, मालूम ही नहीं पड़ता था। उस समय बाबा की टचिंग कहें या बाबा की हाजिरी कहें। दादी का जो बाबा से कनेक्शन था, उस कनेक्शन से बाबा टच करते थे और दादी उत्तर दे पाती थी। जब दादी लंदन में आती थी तो साइलेंस का अनुभव सभी को कराती थी। उस साइलेंस के वाइब्रेशन हर एक आत्मा को उड़ा देते थे। बड़ी-बड़ी सभाएं (15,00) होती थी, दादी की स्थिति बहुत सेवा करती थी। ■■■

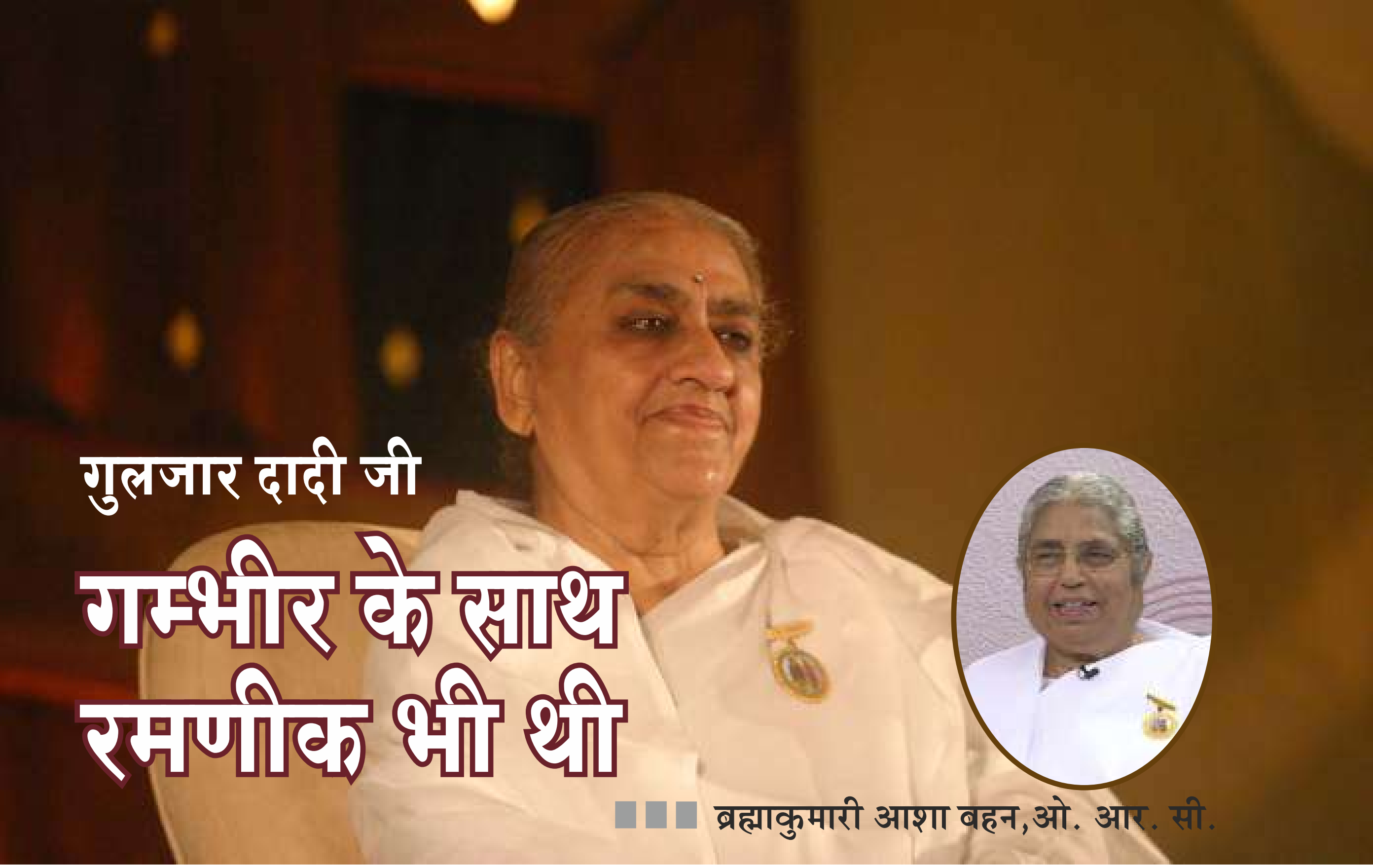

गुलजार दादी जी

गम्भीर के साथ रमणीक भी थी

■■■ ब्रह्माकुमारी आशा बहन,ओ. आर. सी.

संगमयुग पर बापदादा का सानिध्य, पालना प्राप्त होना बहुत बड़ा भाग्य है। उसके साथ-साथ मम्मा-बाबा की डायरेक्ट पालना में पले हुए आदिरत्न दादियों की पालना हमें मिले, वह भाग्य भी कम नहीं है। जब हम कॉलेज की गर्मियों की छुट्टियों में मधुबन आते थे तो बड़ी दीदी, गुलजार दादी जी से कहते थे कि 'इससे पूछो इसके जीवन का लक्ष्य क्या है।' यह भी एक भाग्य है कि सभी दादियाँ, वरिष्ठ दादाएं लौकिक घर में अनेक बार आए हैं। तो गुलजार दादी जी बड़े प्यार से उंगली पकड़कर, अनेक बार शाम के वक्त, नक्की लेक पर ले जाती थी। वहां हम दोनों बैठ जाते थे तो दादी बाबा की बातें बताती थी और लक्ष्य को पक्का कराती थी। उस आयु में दादी जी की नजर मुझ पर पड़ी जो मुझे यज्ञ में समर्पित होने के लिए एक तरह से निमित्त बनी।

गो सून, कम सून

दादी जी बहुत क्विक संदेशी थी। बाबा मुरली चलाते थे कि ध्यान-दीदार की बातों में ज्यादा इंटरेस्ट नहीं लेना है। एक बार हम हिस्ट्री हॉल में बैठे थे, गुरुवार का दिन था। ब्रह्माबाबा बीच की संदली में बैठे थे, गुलजार दादी एक तरफ की संदली पर बैठी थी और दूसरी तरफ की संदली खाली थी, हम सब सामने बैठे हुए थे। बाबा ने कहा, 'बच्ची, गो सून एंड कम सून।' दादी की एकाग्रता की शक्ति, निरसंकल्पता की शक्ति, देह से न्यारे होने की शक्ति इतनी जबरदस्त थी कि एक गीत चला, 'चली कौन से देश गुजरिया तू सज-धज के।' दादी जी वतन में गई, भोग स्वीकार कराया और गीत खत्म होते-होते दादी जी वतन से वापस आ गए।

जब सेवाएं आरंभ हुई तो आदरणीय जगदीश भाई जी साहित्य की रचना करते थे और यदि कोई स्पष्टीकरण चाहिए होता तो प्रेस से फोन करते कि बाबा से मेरे लिए यह डायरेक्शन लेकर के दो। दादी उसी वक्त फोन का रिसीवर टेबल पर बाजू में रख ध्यान में जाती, भाई जी के लिए संदेश लेकर आती और उन्हें फोन पर बता देती, यह हमने अपनी आंखों से देखा।

क्लियर बुद्धि

एक बार किसी परिस्थिति में मैं निर्णय नहीं ले पा रही थी। दादी उस वक्त विदेश में इजरायल के रेगिस्तान में थी, जहां फोन नहीं लग पा रहा था। परंतु मुझे बापदादा से डायरेक्शन चाहिए था तो मैंने दादी को फोन लगाया, दादी जी कार में थी। कैसे भी करके उनको फोन लग गया और दादी जी को मैंने सारी बात बताई। दादी जी ने मुझे तुरन्त उत्तर दे दिया। चलती कार में ही बाबा उनको बुला लेता था और उत्तर दे देता था। बाबा इतनी क्लियर बुद्धि को ही उड़ा सकता है। इसी तरह 16, 16 घंटे अव्यक्त मिलन के लिए बैठे रहना कोई मासी का घर नहीं होता, यह तब होता है जब अपने शरीर पर शासन, प्रकृति पर आधिपत्य होता है।

मधुर व्यवहार

मेरा भाग्य रहा जो मैं दादी जी के रूम में ही रही। दादी कितना संभाल और अटेंशन रखती थी! ध्यान मुझे रखना चाहिए था परंतु दादी रखती थी कि सारा दिन यह सेवा करती है और जब कमरे में आती है तो इसे किसी भी तरह की कोई डिस्टरबेंस नहीं होनी चाहिए, दादी की कमाल थी। व्यवहार इतना मधुर, वह बहुत जल्दी सामने वाली आत्माओं को रूहानियत की शक्ति से, योग की शक्ति से, माधुर्य से अपना बना लेती थी।

स्पर्श करने वाला भाषण

दादी बहुत ज्ञानवान थी, ज्ञानी तू आत्मा नंबरवन थी। दादी ने सुनाया था, एक बार बाबा माथुर जी की कोठी में दिल्ली में आए थे। बाबा ने कहा कि आप लोग कैसे कान्फ्रेन्स करते हैं, वह सब करके दिखाओ। तो एक चेयरमैन बना, एक मंच-सचिव बना, एक कुछ और बना और गुलजार दादी जी ने भाषण दिया। बाबा ने दादी जी को पास किया नंबरवन। दादी जी का भाषण दिल्ली में व भारत में नंबरवन होता था, बिल्कुल स्पर्श करने वाला, कईयों की आंखों में आंसू भी आ जाते थे।

स्टडी करो और मुरली से नए प्रश्न निकालो

दादी जी नंबरवन स्टूडेंट थी और एक आदर्श टीचर भी थी। जब दादी जी क्लास में आकर मुरली सुनाते तो मुरली में से नई-नई बातें, नए-नए प्रश्न निकाल कर हमें पूछते थे। ऐसे प्रश्न पूछते थे जिससे हमारी बुद्धि चले। उन दिनों मुरली में सार, प्रश्न-उत्तर नहीं आते थे। दादी कहती थी, बैठकर स्टडी करो और मुरली से नए प्रश्न आदि निकालो। मैं क्लास कराने जाती थी तो दादीजी क्लास सुनते थे, पूछते थे, 'तुमने आज यह बात सुनाई?' ऐसे दादी जी अटेंशन देते थे।

अपना कार्य अपने आप करते थे

दादी हमें कभी खाली नहीं बैठने देते थे। म्यूजियम में अगर कोई देखने वाला नहीं आ रहा होता तो दादी कहती कि 'यह तुम्हारी ही कमी है जो बाबा के म्यूजियम में दर्शक नहीं आ रहे। बाबा के म्यूजियम में बैठे हो ना तो बातें नहीं करो (हम कन्याएँ आपस में बातें करती थी), आत्माओं का आह्वान करो, आत्माएँ आनी चाहिएँ।' दादी स्वयं भी बिल्कुल साइलेंस में बैठ जाते थे। दादी इतनी नम्रचित, निर्मान थी, हम भी वहां बैठे हैं परंतु दादी को यदि किसी को बुलाना हो तो दादी खुद उठ कर जाती थी और अन्दर से बुलाती थी। हम कहते थे, दादी, आपने हमें क्यों नहीं कहा, हम भी तो यहीं बैठे हैं? परंतु, दादी किसी को आर्डर नहीं करते थे, अपना कार्य अपने आप करते थे।

इकोनामी की अवतार

दादी छोटे-छोटे कार्य जैसे सिलाई भी करती तो इतनी न्यारी होकर करती जैसे शरीर में है ही नहीं, खड़े-खड़े ही करती थी। इकोनामी की अवतार थी दादी। कोई कपड़ा फट जाता तो चक्ति लगाकर पहनती थी। एक बार एक ब्लाउज की एक बाँह, दूसरे ब्लाउज की दूसरी बाँह जोड़कर कहा कि देखो, एक ब्लाउज तैयार हो गया। दादी को धन की बहुत कदर थी। कभी प्लेन में अगर छोटी बहन ने कोई चीज ली और कहा, दादी, आप भी ले लो, तो दादी कहती थी, यह इतनी महंगी होगी, मैं नहीं लूंगी। फिर दादी को बताते थे कि दादी, यह फ्री में है, हमने टिकट के साथ इसका पेमेंट किया हुआ है तो फिर दादी कहती थी, ठीक है। दादी का अंत तक यह अटेंशन रहा कि एक्स्ट्रा धन मुझ पर खर्च ना हो।

एक बार दिल्ली, पांडव भवन में बहुत बड़ा आयोजन

था। बड़ी-बड़ी दादियाँ बृजेंद्रा दादी, निर्मल शांता दादी आदि और बड़े-बड़े भाई सारे भारत से आए हुए थे। उन्हीं दिनों संजय गांधी जी की मृत्यु हुई थी, तो निर्वैर भाईजी ने कहा कि आशा बहन, इंदिरा गांधी जी से टाइम ले लो। टाइम मिल गया और हम सब, दादियों के साथ मिलने चल पड़े। वहाँ जाने पर हमें किसी ने कहा था कि जिस रूम में संजय गांधी जी की बॉडी को रखा गया था, उस रूम में इंदिरा जी रोज आती हैं। आप भी यहीं आकर बैठ जाओ, तो हम वहीं बैठ गए। परंतु इंदिरा गांधी जी ने उस कमरे में आने से मना कर दिया क्योंकि अभी संजय गांधी जी को गए केवल 13 दिन ही हुए थे और उस कमरे में आने से वह भावुक हो जाती थी। फिर डॉक्टर कुमुद जोशी जी इंदिरा जी को लेकर आए और बड़ी दादी उसे मिले।

साक्षी होकर पार्ट प्ले करो

मेरी आयु छोटी थी, सेवा के क्षेत्र में नई-नई थी, मुझे धक्का लगा कि इतनी बड़ी दादियाँ गईं और अपॉइंटमेंट जैसी सोची थी वैसी नहीं हुई, तो मेरा मन उदास हो गया। उसी शाम एक प्रोग्राम में मुझे मंच संचालन करना था तो मैंने गुलजार दादी जी को कहा, 'दादी, मैं शाम का प्रोग्राम नहीं करूंगी, आप किसी और को बोल दो।' दादी ने कुछ नहीं कहा, सिर्फ एक बार पूछा कि 'क्या यह ज्ञान है?' इस घटना ने मेरे दिमाग को बिल्कुल खोल दिया, मन-बुद्धि में यह बात सेट हो गई कि 'अच्छा हो तो खुश, ना हो तो नाखुश, नहीं, साक्षी होकर पार्ट प्ले करो और ज्ञान की रीति से करो।'

साइलेंस बड़ी है

वीआईपी सेवा दादी दिल्ली में स्वयं करती थी। उस वक्त हमारे पास कार भी नहीं थी, बृजमोहन भाई जी स्कूटर से जाकर ऑटो लेकर आते थे और जब तक ऑटो रिक्शा नहीं मिलता था, हम पैदल-पैदल ही चलते थे। वीआइपीज को कैसे हैंडल करना है, वह मैंने दादी जी से सीखा। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी, दादी जी को राष्ट्रपति भवन में रिसीव करते थे। अपना ऑफिस छोड़कर बाहर गार्डन में बैठकर वार्तालाप करते थे, मेडिटेशन के बारे में, शिवबाबा के बारे में, इस संसार के बारे में, ज्ञान के बारे में। दादी को पैदल चलकर ना आना पड़े, तो दादी की गाड़ी भी पोर्च में आनी चाहिए, इतना ख्याल रखते थे। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने एक बार कहा, साइंस बड़ी या साइलेंस? फिर खुद कहते थे कि साइंस। लेकिन दादी जी के सानिध्य में धीरे-धीरे उनकी बुद्धि में यह बैठा कि साइलेंस बड़ी है। साइलेंस का जितना महत्व आप में है उतना मैंने कहीं नहीं देखा, ऐसा वे कहते थे।

दादी जी की रमणीकता

दादी जी बहुत रमणीक भी थी। जब कॉलेज की छुट्टियों में मैं मधुबन आती थी, तो एक डैम था जहां हम पिकनिक के लिए जाया करते थे। उस पिकनिक में ज्ञान के प्रश्न-उत्तर होते थे। एक बार दादी जी ने मुझे प्रश्न किया, 'आशा, बताओ कितने प्रकार के आलू होते हैं?' मैंने कहा, 'दादी, छोटा आलू, बड़ा आलू, पहाड़ी आलू, शिमला का आलू।' दादी बोले, 'और सुनाओ, और सुनाओ।' मैंने कहा, 'और नहीं आता' तो कहती है, 'तुमने सुना है दयालु, कृपालु, श्रद्धालु, भक्तालु?'

एक दिन दादी ऊपर तीसरे माले पर थे और मैं नीचे ऑफिस के आगे बड़े ध्यान से कुछ पढ़ रही थी। दादी ने बड़े प्यार से तीसरे माले से मुझ पर एक अमरूद फेंका और हंसने लगी, देखो, यह बहुत ध्यान से पढ़ रही है और इसके ऊपर, ऊपर से अमरूद आया।

दादी जी सदा अपना भाषण खुद तैयार करते थे और मुझे भी अपने साथ हर जगह ले जाते थे। क्लास कैसे कराना है, भाषण कैसे करना है, कौन-से पॉइंट्स देने हैं, ये सब दादी सिखाते थे। मुझे कहते थे कि चलो तीसरी मंजिल पर, तुम अपना भाषण तैयार करना और मैं अपना भाषण तैयार करूंगी।

दादी गुलजार, जानकी दादी और बड़ी दादी के आगे सदा एक छोटी कुमारी की तरह चलती थी। एक फोटो है जिसमें गुलजार दादी, प्रकाशमणि दादी और जानकी दादी जी खड़े हैं। वह फोटो दिखाकर हमने दादी को जानबूझकर कहा कि 'दादी, आप सबसे बड़ी हो ना?' तो दादी ने कहा, 'नहीं, मैं बड़ी नहीं हूं, यह प्रकाशमणि दादी स्टेटस में बड़ी है और जानकी दादी आयु में बड़ी है और मैं शरीर की लंबाई में बड़ी हूं।' ■■■

संकल्प और बोल की एनर्जी को बचाकर, भगवान को समर्पित करने वाली आदरणीया दादी गुलज़ार

■■■ ब्रह्माकुमार राजू भाई, मुरली विभाग

यज्ञ इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण दिन है 18 जनवरी, 1969 जब निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्माबाबा अव्यक्त होकर अव्यक्त वतनवासी बने। उसके पश्चात् 21 जनवरी, 1969 को शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा (बापदादा) दोनों ने दादी गुलजार जी के तन में प्रवेश किया और तब से 31 दिसम्बर, 2017 तक लगाकर 48 वर्ष तक दादी जी के रथ द्वारा बापदादा की अव्यक्त पालना देश-विदेश के हजारों-लाखों ब्रह्मावत्सों को मिलती रही। दादी जी भी 11 मार्च, 2021 के दिन अव्यक्त-वतन वासी बनी। ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास में यह भी बहुत बड़े परिवर्तन का दिन है।

दादी जी का स्वभाव बचपन से ही बहुत सरल था, उनकी इसी नेचर के कारण उन्हें नम्बरवन ट्रांस का पार्ट मिला। अव्यक्त वतन के अनेक गुह्य रहस्य, अव्यक्त ब्रह्मा का राज़, पहले-पहले दादी जी के द्वारा ही स्पष्ट हुआ। दादी जी कई दृश्य वतन में देखके आती थी, उसी आधार से चित्रों आदि का भी निर्माण हुआ।

दादी जी की बुद्धि बहुत स्वच्छ थी

दादी जी सदा एकांत में, अन्तर्मुखी रहती थी। कभी कोई से बातें करना, हंसना, इधर-उधर की बातों की लेन-देन करना, यह दादी जी की नेचर में ही नहीं था। बहुत शान्त, सरल स्वभाव, एकांतवास का गहन अभ्यास था। संगठन के बीच में होते भी, जब तक कोई उनसे पूछेगा नहीं, तब तक कोई भी शब्द नहीं बोलती थी। वे बहुत शार्ट एण्ड स्वीट जवाब देती, यथार्थ जो बात होती वह कहकर चुप हो जाती। बुद्धि बहुत स्वच्छ, दिव्य होने के कारण ट्रांस के बहुत क्लीयर मैसेज दादी जी द्वारा आते रहे।

सेकण्ड में उड़कर वतन में पहुंच जाती थी

मेरी पहली मुलाकात दादी गुलज़ार जी के तन में प्यारे बापदादा से सन् 1971 में बाबा के कमरे में हुई थी, जब वे गद्दी पर आये हुए थे। बाबा जब दादी जी में प्रवेश होते तब दादी जी के चेहरे का हाव-भाव, उनकी दृष्टि, उनके नयन-चयन सब अलग प्रकार से झलकने लगते, पूरे चेहरे पर लाइट का आभामण्डल और अलौकिक मुस्कान छा जाती। ब्रह्मा बाप के अव्यक्त होने के पश्चात् दीदी मनमोहिनी जी और दादी प्रकाशमणि जी के साथ विशेष सन्देशी के रूप में दादी जी का पार्ट रहा। जब दोनों दादियां, दादी जी को कहती कि अभी बाबा को बुलाओ या बाबा से इस बात के लिए सन्देश लेकर आओ, तो दादी आज्ञाकारी बन सदा हाँ जी करती और सेकण्ड में बाबा के पास वतन में उड़कर पहुंच जाती। कभी बाबा स्वयं प्रवेश हो जाते, कभी वे सन्देश लेकर आ जाती।

वतन से लौटकर दादी मुरली पढ़ती थी

बापदादा कई बार शाम को 7 बजे दादी जी के तन में प्रवेश होते और 12-14 घण्टे तक बच्चों से मिलन मनाते। दादी जी ने अपना तन-मन पूरी तरह बापदादा को

समर्पित किया हुआ था। बापदादा की प्रवेशता के बाद दादी जी के संकल्प मर्ज हो जाते और बापदादा उनके तन द्वारा ईश्वरीय महावाक्य उच्चारण करते, वे सब टाइप करने का सौभाग्य मुझे मिला। बापदादा सभा में ही होते और टाइप की हुई मुरली उन्हें हाथ में मिल जाती, जिसे दादी जी वतन से वापस आने के बाद पढ़ती थी।

दिलों को जीता

हमारी मीठी दादी जी, परम आत्मा और आदिपिता ब्रह्माबाबा दोनों का छोटा नंदी बन, अथक रूप से यह पार्ट बजाती रही। वह इतनी निर्मानचित थी जो कभी बोल-चाल में भी मैं शब्द का प्रयोग नहीं करती। जो बाबा कहे, जो दादियां कहें, सदा जी बाबा, जी दादी कहकर सबके दिलों को जीत लेती। उनकी मधुर वाणी अनेक आत्माओं के जीवन को परिवर्तन कर देती।

व्यर्थ से मुक्त

समय प्रति समय अव्यक्त बापदादा ने दादी की कई विशेषताओं का वर्णन किया है। एक बार बाबा ने कहा कि इस बच्ची ने अपने संकल्प और बोल की एनर्जी बचाई है, इसलिए वह एनर्जी बाप के कार्य में आ रही है क्योंकि एनर्जी अधिक सोचने वा अधिक बोलने से खर्च होती है। इस बच्ची ने कभी व्यर्थ नहीं सोचा। क्यों, क्या, कैसे.. के प्रश्नों में नहीं गई। दादी जी हमेशा अपनी क्लासेज में कहती कि व्यर्थ से बचना है तो क्यों, क्या, कब, कहाँ और कैसे – इन 5 प्रश्नों की क्यू में नहीं जाना। व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति का कारण ये प्रश्न ही हैं, इनसे दादी खुद भी पार रही और सबको इनसे बचने की प्रेरणा दी।

सरल स्वभाव, मिलनसार

दादी के पास कभी भी जाओ, उनसे मिलो, सदा ऐसे मुस्कराते हुए लाइट रूप में मिलती थी। कभी उनके चेहरे पर उलझन नहीं दिखाई देती थी। दादी जी के साथ कई बार अलग-अलग स्थानों पर सेवा में अथवा पिक-निक आदि के लिए जाना होता था। दादी वहाँ भी सदा बहुत रमणीक रीति से मिलती-जुलती और यही कहती, खाओ, पीओ, मौज करो लेकिन इसके साथ मेडीटेशन भी जरूर करो। वास्तव में मेडिटेशन करना ही रूहानी

मौज है। हम कभी जानबूझ कर दादी जी से कोई भी उल्टे-सीधे प्रश्न पूछते, तो दादी बहुत प्यार से मुस्कराते हुए जवाब देती और कभी-कभी कहती, इस बात का उत्तर तो बाबा ने ही अभी तक नहीं दिया है, मैं कैसे दूं। ऐसे शार्ट में सबको सन्तुष्ट कर देती। दादी जी सबके साथ सरल स्वभाव से मिलनसार होकर चलती, उन्हें कहीं भी बिठा दो, कुछ भी खिलाओ, पिलाओ, उनके हाव-भाव से किसी को यह नहीं लगता कि दादी इतनी बड़ी हैं। भगवान का रथ हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का अभिमान रिंचक मात्र भी छू नहीं पाया। दादी जी ने एक बार मुझे कहा कि कोई एक ऐसा ग्रुप बनाओ जो केवल स्वचिंतन करने वाला हो। कभी मुरली से प्रश्न निकाल कर परीक्षा लो। कभी आपस में किसी टॉपिक पर वर्कशाप करो। कभी विशेष योग के प्रोग्राम रखो लेकिन पूरा ही ग्रुप केवल स्व-चिंतन करने वाला हो, कभी कोई किसी का परचिंतन न करे। अगर किसी को अपनी उन्नति करनी है तो दादी यही कहती कि खुद को देखो और एक बाबा को देखो, किसी भी साइडसीन को नहीं देखना।

दिल में, मुख में सदा बाबा-बाबा

दादी जी जब वतन से कोई सन्देश लेकर आती तो वे खुद एक बार रफ लिखती फिर उसे फेयर करती, उसमें उनका काफी समय जाता इसलिए मैं उनके द्वारा रफ लिखा हुआ सन्देश लेकर आता और उसे फेयर करके, टाइप करके देता। इस प्रकार दादी जी के साथ सेवा करने का सौभाग्य मुझ आत्मा को मिला। दादी जी से मिलने के लिए

हमें कभी अपांइटमेंट लेने की जरूरत नहीं होती थी, दादी इज़ी रूप से मिलती, चाहे वह भोजन कर रही हों, या आराम कर रही हों... बहुत सरलता से देखते ही कहेंगी, आओ बैठो, कोई काम हो तो बताओ। ऐसी विश्व की सर्व-श्रेष्ठ महान आत्मा, जो भगवान का साकार माध्यम बनी, जिनके द्वारा हजारों-लाखों आत्माओं को अलौकिक पालना मिली, उन्हें कभी मैंपन का अभिमान नहीं आया इसलिए अनेकों की दुआओं का पात्र बन गई। उनके दिल में, मुख में सदा बाबा, बाबा, बाबा के बोल ही रहे।

एक बार गुलज़ार दादी की तबियत खराब हो गयी, पाण्डव भवन में काफी भाई-बहनें बापदादा से मिलने के लिए पहुंचे हुए थे। उन्होंने कहा, जब तक हम बापदादा से नहीं मिलेंगे, तब तक वापस नहीं जायेंगे इसलिए गुलजार दादी ने सन्देश द्वारा बापदादा से कहा कि बाबा, आज तो मेरा बैठना मुश्किल है और इन बच्चों को जिद्द है, आप कोई दूसरे तन में आकर उन्हें अपनी भासना दे दो। तो मोहिनी बहन (मधुबन) बाबा के कमरे में, बाबा के पास वतन में गई और कुछ समय उनके तन में बापदादा पधारे। बापदादा ने आये हुए सभी बच्चों से मुलाकात की और अन्त में दादी गुलजार जी ने बापदादा को अपने हाथों से भोग स्वीकार कराते विदाई दी। यह भी बड़ा वन्डरफुल दृश्य आंखों के सामने घूम रहा है।

ऐसी अव्यक्ति पालना जो दादी जी ने सभी को दी है, अभी हम सबको उस पालना का रिटर्न करना है क्योंकि अभी बापदादा के साथ एडवांस पार्टी में गई हुए सभी दादियां भी देखेंगी कि स्थापना के रहे हुए कार्य को ये सब मिलकर कैसे सम्पन्न करते हैं। वैसे भी पेपर के समय टीचर्स साक्षी हो जाते हैं, ऐसे अभी बापदादा और निमित्त दादियां साक्षीद्रष्टा बन देखेंगी और सभी में सूक्ष्म शक्तियाँ भरती रहेंगी। बाबा का तो वायदा है, बच्चे जब दिल से मुझे याद करेंगे तो बाबा सम्मुख हाज़िर हो जायेगा।

स्वस्थिति अच्छी है तो परिस्थितियां परेशान नहीं करेंगी

हमें तो ऐसे लगता है, जैसे स्थापना के प्रारम्भ में साक्षात्कार हुए कि इनके पास जाओ। ऐसे अब अन्त समय में साक्षात्कार की लीला चलेगी, उससे ही प्रत्यक्षता होगी। यह हमारी दादियां जो सम्पन्न बनकर के गयी हैं, अपने सम्पूर्ण स्वरूप का अनुभव करायेंगी और सबको प्रेरित करेंगी इसलिए बाबा ने शायद इस कोरोना-काल के अन्दर वाचा सेवा को कम कराया है। हर ब्राह्मण आत्मा मनसा सेवा की अनुभवी बनी हैं। परिस्थितियां तो आयी हैं, आती रहेंगी लेकिन जिन्होंने स्वस्थिति अच्छी बनाके रखी है, उन्हें परिस्थितियां परेशान नहीं कर सकती। वे सदा मौज में रहते हैं। अभी समय ऐसा दिखाई देता है कि अचानक बहुत बड़ा परिवर्तन होगा क्योंकि इतने बड़ी कलियुगी दुनिया का परिवर्तन होना है। अभी कितनी अधिक आबादी है, चारों ओर प्रदूषण है, पांचों तत्वों का विकराल रूप है, इस कलह-क्लेश की दुनिया का महा-परिवर्तन होगा तो जरूर उसमें कुछ तो सहन करना पड़ेगा। लेकिन सहनशक्ति, धैर्य की शक्ति, सामना करने की शक्ति, समाने की शक्ति उन्हों में रहेगी जो अपने जीवन को बहुत न्यारा-प्यारा तपस्वी बनाकर रखेंगे।

दादियों समान अचल-अडोल बनना है

अब समय है, हम सब तपस्वीमूर्त बनकर रहें, कोई भी प्रश्नों में उलझें नहीं। बाबा कहता है, जो सीन सामने आ रही है उसे साक्षी हो करके देखो, फुलस्टॉप लगाओ और आगे बढ़ जाओ। शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्पों से सम्पन्न रहो ताकि आने वाली समस्याओं का, समाधान करने में सहयोगी बन सको। कोई भी बात अपनी तपस्या में बाधा रूप न बने, यह ध्यान रखना है क्योंकि जो कुछ ड्रामा में चल रहा है, उसमें कल्याण समाया हुआ है। हमारी दादियों ने यज्ञ को जिस प्रकार से आगे बढ़ाया है, अभी उनके इस रहे हुए कार्य को हम सबको मिल करके सम्पन्न करना है। कार्य भी सम्पन्न हो और हम सब भी सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर के बाबा के साथ चलें, बाबा घर का गेट खोले। सब आत्माओं को मुक्ति, जीवनमुक्ति मिले, दु:खों से सब छूट जायें, ऐसी शुभ भावना के साथ बहुत अच्छी तपस्या करनी है। संकल्पों की हलचल समाप्त। जैसे दादियों ने अपनी स्थिति एकरस बनायी ऐसे हम सबको भी एकरस, अचल, अडोल स्थिति में स्थित रहना है। ■■■

दादी हृदयमोहिनी ने सेवाकेन्द्र को शीतलता का कुंड बनाकर रखा

■■■ ब्रह्माकुमारी सुदेश बहन, जर्मनी

मुझे 1957, 58 के अपने आध्यात्मिक जीवन के आदिकाल की स्मृतियां इतनी स्पष्ट सामने आ रही हैं, जैसे कि वह आज का, अभी-अभी का ही नजारा हो। उस दिन मैं कॉलेज से करोल बाग सेवाकेन्द्र में पहली बार आई थी, तो पहली दफा गुलजार दादी जी को देखा, जो भोग लगाने के लिए संदली पर बैठे थे। दादी जी भोग लगाने वतन में गई, तुरंत वापस आई और कहा कि 'जो बाबा के नए बच्चे बैठे हैं, वे अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में कब समर्पण करेंगे, लिख करके दो।' औरों ने क्या लिखा, वह तो मुझे पता नहीं परंतु मैंने लिखा कि 'मैं अपना जीवन अगले वर्ष समर्पित करूंगी।' क्योंकि उस समय मैं बीए फाइनल कर रही थी और संकल्प था कि यह वर्ष पूरा होने पर एक ट्रेनिंग की जाए। दादी बाबा के पास हम सबके पत्र लेकर गई। दीपावली का समय था, बाबा ने उन्हें दृश्य दिखाया कि बहुत से दीपक जग रहे हैं। जिन दीपकों में कम रोशनी है तो बाबा उनमें रोशनी भर कर के आगे रख रहे हैं। दादी जी ने बाबा का वह संदेश लाया 'लास्ट सो फास्ट जाने का' और अपने जीवन में ज्ञानघृत डालकर के ज्योत को प्रत्यक्ष करने का।' वह संदेश मेरे रूहानी जीवन का बीज बन गया। दादी जी ट्रांस मैसेंजर नहीं, ट्रांसमीटर थी, ट्रांसमीटर का काम है जनरेटर की एनर्जी को ट्रांसमिट करना।

जीवन का भोग लगा दादी जी द्वारा

दादी राजोरी गार्डन में भी भोग लगाने आते थे। मैं कॉलेज से आकर उनके एकदम सामने नीचे बैठती थी। गीत बजते थे, चल उड़ जा रे पंछी के अब यह देश हुआ बेगाना (6 मिनट का)। दूसरा, धरती को आकाश पुकारे, आजा-आजा प्रेम द्वारे, आना ही होगा (9 मिनट का)। उस वक्त इतना सुंदर अनुभव होता था, ऐसा लगता था कि जैसे दादी जी के नयन उड़न खटोला हैं और उन में बैठ कर के हम बाबा के पास जा रहे हैं। दादी जी की दृष्टि की दिव्यता, शुद्धि, प्रेम और परमात्मा की प्रवेशता के बाद की दृष्टि और प्रवेशता के पहले की दृष्टि खींचती थी। दादी जी को झटका लगता था, वह ध्यान में चली जाती थी, हमको झटका लगता था, हम वहीं रह जाते थे। हर बार हमें यही रहता था कि हमें भी जाना है। दादी भोग लगाने जाते थे तो हमें लगता कि हमें भी इस जीवन का भोग लगाना है, समर्पण करना है और जीवन को समर्पण करने की प्रेरणा दादी जी से ही मिली।

भूलों को भूल जाती थी दादी

मेरा सौभाग्य रहा कि मैं समर्पित हुई तो मुझे दिल्ली, कमला नगर सेवाकेन्द्र में दादी जी, जगदीश भाई जी के साथ रहने का मौका मिला। दादी जी का चेहरा, व्यवहार, चिंतन इतना शुद्ध था जैसे कि स्वाभाविक रीति से स्वचिंतन में है। बाबा कहते हैं कि सेंटर का वातावरण शीतलता का कुंड बना दो, जो भी उसमें आए तो ऐसा प्रभाव लेकर जाए, तो दादी के साथ रहते हुए भी हमें ऐसा ही अनुभव होता था। दादी जी की रूहानियत की सुगंध में ऐसा लगता था कि हम खुशबूदार बगीचे में हैं। हम नए-नए थे तो जरूर कुछ भूलें भी होती थी परंतु दादी ने कभी यह नहीं महसूस कराया कि क्यों हुआ ऐसा, यह क्या किया! क्यों, क्या दादी जी के शब्दों में कभी नहीं देखा। दादी जी की शुद्ध दृष्टि और हृदय में जो भोलेपन की भावना थी जिससे वे स्वाभाविक रीति से भूल को भूल जाती थी और हमको भी भूल भुला देती थी। कभी हमें आत्मग्लानि महसूस नहीं करायी, यह कमाल थी दादी जी के हृदय की शुद्धता और पवित्रता की। दादी जी ने सेंटर का वातावरण स्नेह का, शुभकामना, शुभभावना का बनाकर रखा।

बहादुर सिर्फ वह नहीं है, जो शत्रुओं पर विजय हासिल करता है बल्कि वह भी है जो स्वयं पर विजय हासिल करता है

हृदय के शब्द हृदय को छूते थे

जगदीश भाई जी सेवा का उमंग-उत्साह दिलाते थे और सेवा में हमें सदा बिजी रखते थे इसलिए वहां एक-एक सप्ताह का कार्यक्रम चलता रहता था। कभी पवित्रता का सप्ताह, कभी शांति का सप्ताह इस तरह। उसमें दादी जी प्रवचन करते थे तो वह प्रवचन भी प्रवचन नहीं लगता था लेकिन दादी के हृदय के शब्द हृदय को छूते थे। उस समय सेवा अर्थ जहां भी जाते थे तो इकोनोमी का पाठ पक्का था। बिल्कुल साधारण सिंपल जीवन था। हम एक जगह प्रदर्शनी करने गए। जिस हाल में सारा दिन प्रदर्शनी की उसी हॉल में दरी पर अपनी-अपनी चादर बिछाकर पटरानी बन कर सो गये। ऐसे थी दादी के साथ स्टूडेंट् लाइफ, परफेक्शन की लाइफ। दादी के साथ रहते 62 साल कैसे बीत गए। हर दिन, हर समय का अपना विशेष अनुभव रहा। दादी की पर्सनालिटी भी ऐसी थी जैसे मैग्नेट, मैग्नेट को आकर्षित करता है। जैसे साकार बाबा के आकर्षण में निराकार बाबा खिंच कर आ गए, ऐसे दादी के आकर्षण में बापदादा खिंचकर आ गए।

जिम्मेवारी होते भी न्यारापन, हल्कापन

दादी की अव्यक्त स्थिति पहले से ही थी। दादी में इतना भोलापन था, जो दादियों के प्रति, दीदी मनमोहिनी के प्रति, बड़ी बहनों के प्रति सदैव अपने को एक छोटी बच्ची समझा। नम्रता, दिव्यता और सर्व गुणों की मूर्ति थी। चेहरे पर कोई चिंता कभी दिखाई नहीं दी। जिम्मेवारी होते भी इतना न्यारापन, हल्कापन था। कोई और ने भी भूल कर दी होती तो उसका भी दादी पर प्रभाव नहीं रहता था। ऐसे क्षमा की मूर्ति, स्नेह की मूर्ति, दूसरी आत्माओं में भी क्षमा की भावना उत्पन्न कर देती थी।

सुंगध वाला बर्तन सुगन्धित हो जाता है

दादी के साथ विदेश में भी भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाना हुआ। उस वक्त भी दादी सरलता और भोलेपन से चलती थी। यदि मैं टॉपिक ना भी दूँ, तो भी दादी अपने जीवन के जो अनुभव सुनाती वे भी आकर्षित करते थे। एक बार हम स्कॉटलैंड गए थे, उस वक्त दादी ने इतनी सरल रीति से यह समझाया कि कैसे विश्व का परिवर्तन कल्याणकारी है, परमात्मा का प्लान क्या है, नई सृष्टि की स्थापना कैसे होनी है आदि। ऐसे ही पोलैंड में कम्युनिस्ट का प्रभाव था परंतु दादी जी के स्नेह, पवित्र वृत्ति और वाइब्रेशन, दृष्टि और भावना के कारण उन लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। दादी जी की अशरीरी स्थिति, देह से न्यारा होकर के बाबा के पास जाना, साइलेंस की शक्ति, फिर बाबा का उन में आना, दादी की दृष्टि से दृष्टि देना, तो जिस बर्तन में सुगंध रखी होती है वह बर्तन भी सुगंधित हो जाता है। दादी जी परम सुगंध से सुगंध खींचती थी।

अव्यक्त बाबा के साथ अव्यक्त दादी

ज्ञान स्वरूप आत्मा, गुणमूर्त कैसे बनती है, गुणमूर्त आत्मा शिवशक्ति कैसे बन जाती है, शिवशक्ति आत्मा, परमात्मा के प्यार का स्वरूप बनकर के देवात्मा कैसे बन जाती है, यह दादी के जीवन का हमारे सामने प्रैक्टिकल उदाहरण रहा। दादी जी के अव्यक्त होने के दिन बहुत ही स्पष्ट अनुभव हुआ। उस समय हम जर्मनी में थे, वहां रात भर योगभट्ठी रखी थी। संदेश मिलते ही ऐसा अनुभव हुआ जैसे बाबा कह रहा हो, बच्ची, तुम समझती हो कि दादी ने अभी शरीर छोड़ा है, नहीं, यह तो पहले से ही मेरे साथ अव्यक्त रूप में है। ऐसे अव्यक्तमूर्त बाबा के साथ दादी साकार में होते भी अव्यक्त रूप में रहे और अव्यक्त के साथ, अव्यक्त होकर के अव्यक्त सुख-शांति-आनंद देकर के गए। ■■■

दादी ने अन्त में चित्र और चरित्र से सेवा की

ब्रह्माकुमारी नीलू बहन, शान्तिवन

जब मैं पहली बार मधुबन में संदेशी दादी के साथ आई थी, तब दादी गुलजार ने संदेशी दादी से पूछा, 'यह बालिका दादी के साथ रह सकती है?' तो संदेशी दादी ने कहा, 'मैं इनके माता-पिता से पूछ कर बताती हूं।' तब तो हमारे घरवाले राजी नहीं थे कि मैं अपना जीवन समर्पित करूं परंतु मुझे इच्छा थी क्योंकि यह जीवन, ऐसे समाज सेवा करना, बाबा का बनकर रहना मुझे अच्छा लगता था। कुछ समय बाद फिर एक बार बड़ी दादी ने मुझे बुलाकर पूछा, 'आप गुलजार दादी के साथ रहेंगी?' उस वक्त मेरी उम्र 14 वर्ष थी, मैंने तुरंत ही बिना कुछ सोचे-समझे 'हां' कह दिया। गुलजार दादी साथ में ही बैठे थे। उन्होंने कहा कि मुझे यह बालिका पसंद है। उस दिन से बड़ी दादी ने मुझे गुलजार दादी के साथ रखा। इतनी कम आयु में मुझे ज्यादा समझ नहीं थी, तो दादी ने मुझे हर बात सिखाई, कैसे, किसके साथ बात करनी है, कैसे, किसके साथ रहना है, संगठन में कैसे चलना है, हर छोटी-छोटी बातें दादी जी ने सिखाई। दादी के साथ रहते-रहते दादी की जिम्मेदारियां हम संभालने लगे।

जवाब बताने के बाद मुझे कुछ याद नहीं रहता था

जब बापदादा आते थे तो सारी रात हम बाबा के पास बैठे रहते थे। यज्ञ कारोबार से संबंधित यदि कोई बातें होती थी तो बड़ी दादी हमें बता कर जाती थी कि बाबा से इस विषय में पूछ कर मुझे बताना। तो मैं बाबा से पूछती थी और फिर बड़ी दादी को बाबा का जवाब बताने के बाद मुझे कुछ याद नहीं रहता था, ऐसा लगता था कि बाबा ने अपना काम करा कर, मेरी बुद्धि क्लियर कर दी हो।

सामने आने वाला हर व्यक्ति संतुष्ट हो जाता था

ब्रह्मा बाबा के बारे में हम दादी से सुनते रहते थे कि बाबा ऐसे थे, ऐसे थे किंतु प्रैक्टिकली मैंने वह स्थिति दादी की देखी। दादी हमेशा बहुत गंभीर रहती थी, गंभीरतापूर्वक ही अपना हर कार्य करती थी। दादी बहुत कम बोलते थे, बहुत वाचा में आना दादी का स्वभाव नहीं था। परंतु, दादी गंभीर रहकर भी बहुत कुछ कह जाती थी। जैसे बापदादा के सामने जाते थे कुछ सोचकर परंतु सामने पहुंचते ही सब कुछ भूल जाते थे और जो बाबा बोलते थे, बस वही याद रहता था, ऐसे ही दादी के सामने आने वाला हर व्यक्ति संतुष्ट हो जाता था। यदि वह कोई समस्या लेकर आता तो भी शांत हो जाता था। फिर बापदादा की पधरामणि के बाद दादी को कुछ पता नहीं रहता था। बापदादा की चलाई हुई मुरली दादी बाद में पढ़ती थी। दादी बहुत हल्का अनुभव करती थी, जैसे अपने में शक्ति भर कर आई हो।

दादी हर परिस्थिति में एकरस, अचल, अडोल रहती थी

चाहे कुछ भी हो जाए दादी की स्थिति हर छोटी-बड़ी परिस्थिति में भी एकरस, अचल, अडोल रहती थी। वह कहती थी कि 'जो भी करेगा, बाबा ही करेगा, हम तो सिर्फ निमित्त मात्र हैं।' हर बात में दादी, बाबा और बड़ी दादी को आगे रखती थी। बाबा ने निमित्त बनाया है, हमको निमित्त बनकर इनका साथ देना है। बाबा का रथ हूं आदि कोई अभिमान उनमें नहीं था। दादी बिल्कुल निर्माण, नि:संकल्प, हर बात में छोटे बच्चे की तरह रहे।

बाबा की प्रवेशता के बाद बाबा, ऑलमाइटी अथॉरिटी है, तो बहुत पावरफुल स्टेज में बाबा दादी को यूज करता था। दोनों अवस्थाओं में रात-दिन का फर्क था।

चीफ हम नहीं, बाबा है

दादी जानकी ने शरीर छोड़ा तो सब ने मुझे कहा कि दादी की तबीयत देखकर यह समाचार सुनाना परंतु जब मैंने दादी को बताया तो दादी ने कहा, 'मुझे पता है, मैं वतन में दादी से मिलकर आई, दादी बाबा के पास ही है।' हम जो भी यज्ञ की ऐसी बातें दादी को बताते तो ऐसा लगता जैसे कि हम बस रिपीट कर रहे हैं, दादी तो पहले से ही सब कुछ जानती है। फिर हमने कहा, दादी, अब आप संस्था की चीफ हो। तो दादी ने कहा कि 'चीफ हम नहीं, बाबा है।' दादी ने कभी भी कोई पद स्वीकार नहीं किया कि मैं बड़ी हूं आदि। हमेशा कहती थी, 'बाबा ही बड़ा है, बाबा ही सब कुछ कर रहा है, जो बाबा सेवा देगा, हम करेंगे।' दादी ने कभी भी अमृतवेला या मुरली मिस नहीं की। दादी हर एक का क्लास कमरे में बैठकर सुनती थी, ऐसे भेद नहीं था कि आज छोटे की क्लास है या यह बड़े ने क्लास कराया।

दादी हर घड़ी ऐसे लगती थी जैसे बाबा है

सन् 2016 में हमने दिल्ली छोड़ी तो दीवाली मना कर, सब से मिलकर आए थे। फिर जब 31 दिसंबर, 2017 को बापदादा ने कहा, 'समाप्ति वर्ष' तब हम दादी को मुंबई ले गए तो जैसे दादी ने अपना सब कुछ समेट लिया था। मुम्बई, गामदेवी में हम पिछले तीन सालों से थे, दादी हर घड़ी ऐसे लगती थी जैसे बाबा है। कोई कार्य करती या किसी से मिलती थी तो ऐसा लगता था कि दादी थोड़े समय के लिए नीचे आई है। नहीं तो दादी के बोल, चेहरे और आंखों से ऐसा लगता था कि जैसे बाबा ही देख रहा है। मैं साथ ही रहती थी इसलिए मैंने बाबा और दादी की हर चीज देखी है किंतु इन तीन सालों में ऐसे लगता नहीं था कि यह दादी है, जैसे बहुत कड़ी तपस्या कोई करता हो तो कैसे दिखाई देता है, इसी प्रकार की स्थिति दादी की थी।

दादी सबके मन के संकल्पों को जान जाती थी

एक डॉक्टर दादी को चेक करने आए। उनके मन में पद को लेकर कुछ संकल्प चल रहे थे। तो दादी ने उन्हें कहा कि 'आपके मन में कुछ दुविधा चल रही है।' उन्हें बहुत आश्चर्य लगा कि मेरे बिना कुछ कहे ही इन्हें कैसे पता चल गया। उन्होंने दादी को सारी बताई। फिर दादी ने कहा, 'देखो, आपका जो कर्तव्य है वह आप करते चलो, अपने कर्तव्य में कभी नीचे-ऊपर नहीं करना, सफलता आपके साथ है।' एक महीने के बाद अपना अवार्ड और हार आदि लेकर वे दादी के पास आए और बताया कि उनकी पोस्ट उनको वापस मिल गई है और कहा कि 'दादी, आपके कारण ही यह हो पाया है।' तो ऐसे दादी सबके मन के संकल्पों को भी जान जाती थी।

वे अपना कार्य कर रहे हैं, मैं अपना कार्य कर रही हूँ

हम सब साथ में बैठे होते और कुछ चर्चा कर रहे होते तो दादी कहती, 'अभी समय बहुत कम है इसलिए योग पर ध्यान दो और अपने हर कर्म पर अटेंशन दो, योग का पावर बढ़ाओ।' कोविड-19 से पहले दादी ने हमें बोल दिया था कि समय ऐसा आएगा, बाहर नहीं निकल सकेंगे इसलिए अपना योग का पावर बढ़ाओ। दादी को जैसे सब दिखाई देता था, पहले ही हमें बोल देती थी। दादी बीमार थी परंतु ऐसा लगता था जैसे दादी अलग है और उनका शरीर अलग है। शरीर को जो उपचार देना था, वह सब डॉक्टर दे रहे थे, दादी उन्हें कुछ नहीं कहती थी। दादी कहती थी, 'वे अपना कार्य कर रहे हैं, मैं अपना कार्य कर रही हूँ।' जैसे शरीर से बिल्कुल न्यारी हो करके रहती थी।

दृष्टि का प्रभाव

आखिरी एक-दो मास में दादी के बोल बिल्कुल ही कम हो गए थे। एक शब्द में दादी जवाब दे देती थी और दादी की साइलेंस और नैनों की भाषा से हम समझ जाते थे। जैसे बापदादा की पाधरामणि के वक्त भी मैं सारा समय स्टेज पर होती थी। बाबा के नैनों से समझ जाती थी कि अब बाबा को क्या चाहिए। कोई बाबा के सामने आता था तो बाबा को इन्हें फूल देना है या फल देना है या कोई टोली देनी है, बाबा के बिना कुछ कहे ही उनकी दृष्टि से मैं समझ जाती थी। लास्ट समय में दादी की भी वही स्थिति थी। आंखों से ही दादी बता देती थी कि आप यह करो या नहीं करो, यह ठीक है, वह नहीं ठीक है। डॉक्टर कहते थे कि दादी आंखों से बात करती है। जो भी आते थे

उन्हें ऐसा ही महसूस होता था। थोड़े समय से दादी नैनों की भाषा से ही बोलती थी। कुछ अच्छा नहीं लगता था तो थोड़ी देर ऐसे दृष्टि देती थी और आंखें बंद कर लेती थी, तो हम समझ जाते थे। दादी की दृष्टि ऐसी शक्तिशाली हो गई थी जो यदि कोई कुछ गलत कर रहा हो तो बैठे-बैठे ही बहुत विचलित हो जाता था कि हम ठीक नहीं कर रहे हैं। डॉक्टर भी कुछ करने जाते तो दादी की दृष्टि देखकर समझ जाते कि यह ठीक नहीं होगा और खुद संभल जाते थे। दादी की दृष्टि का इतना प्रभाव था।

दादी हर कदम बाबा से पूछ कर ही उठाती थी

कभी मैं दादी से कहती कि 'दादी, मधुबन चलो।' तो दादी कहती थी, 'मैं सोच कर बताती हूं।' फिर कभी कहती थी कि वहां अभी घमासान बहुत है। हम कहते थे, 'तो क्या हुआ?' तो कहती थी, 'अभी घमासान है, समय आएगा तब मैं बताऊंगी।' शांतिवन से जाना होता था दिल्ली तो भी बाबा से पूछती थी, 'मैं जाऊं कि नहीं जाऊं?' जैसे बाबा कहते, वैसे ही करती थी। दादी अपना हर कदम बाबा से पूछ कर ही उठाती थी। ऐसे दादी ने अपनी कर्मातीत अवस्था प्राप्त की ।

लेटे हुए भी दादी सूर्य समान किरणें चारों ओर फैलाती थी

दादी हॉस्पिटल में थी तो हॉस्पिटल वाले भी आकर कहते थे कि जैसे कोई बहुत बड़ी शक्ति है। डॉक्टर्स आते थे 15, 20 मिनट के लिए दादी को देखने और घंटों-घंटों बैठ जाते थे, कहते थे, 'यहां आने के बाद हमारा मन जैसे शांत हो जाता है और अंदर में शक्ति भर जाती है।' दादी के पास वाले कमरे में एक पेशेंट था जिसका ऑपरेशन हुआ था। उसके रिश्तेदार खुद आकर कहते थे, 'ऐसा लगता है जैसे इस कमरे से हमारे पास बहुत शक्ति आ रही है, हमें इतनी ताकत महसूस होती है।' ऐसा लगता था जैसे लेटे हुए भी दादी सूर्य समान अपनी किरणें चारों ओर फैला रही हैं, शुभकामना-शुभभावना कहो वा मनसा सेवा कहो।

बाबा का यज्ञ है, बाबा ही चलाएगा

पहले भी बीच-बीच में दादी की तबीयत खराब होती थी तो एक बार दादी ने बापदादा से पूछा, बाबा ने कहा कि आगे चलकर बच्ची के चित्र और चरित्र सेवा करेंगे। यह बात दादी को इतनी पक्की हो गई जो हम अव्यक्त मुरली चलने पर दादी को दिखाते थे तो दादी कहती थी, 'हम थोड़े ही हैं, यह तो बाबा अपना कार्य करा रहा है, बाबा बैठा है।' मैं भी कभी कहती थी कि 'दादी, आप नहीं जाएंगे तो बाबा के कोई बच्चे नहीं आएंगे, आप चलेंगे तो बाबा आएगा।' तो दादी कहती थी, 'मधुबन, मधुबन है, बाबा, बाबा है, बाबा को जिन बच्चों को साक्षात्कार कराना होगा, बाबा आपे ही कराएगा, बाबा का यज्ञ है, बाबा ही चलाएगा।' दादी को कभी यह संकल्प नहीं उठा कि यज्ञ कैसे चलेगा? बिलकुल निश्चिंत और निश्चय की स्थिति थी।

दादी से कभी कोई पूछता कि 'दादी आपको कोई संकल्प नहीं चलता है?' तो दादी कहती थी कि 'संकल्प क्या चलेगा, मेरा संसार बाबा है और मेरे संस्कार में भी बाबा है।' दादी ने हमें बहुत पक्का कराया कि 'बाबा तुम्हारे साथ है और बाबा हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा।'

डॉक्टर्स में भी परिवर्तन आया

जिन डॉक्टर्स का अपॉइंटमेंट लेने में दो-तीन महीने लगते हैं, वे सिर्फ एक फोन करने पर दादी जी के लिए आ जाते थे। डॉक्टर्स में भी परिवर्तन आया, आध्यात्मिक ज्ञान क्या होता है, दादी ने उन्हें सिखाया। उन्हें कभी ऐसा नहीं लगा कि हम किसी पेशेंट को देखने आए हैं बल्कि कोई विशेष महान हस्ती की ट्रीटमेंट करने आए हैं। दादी अपनी मर्जी की मालिक थी। वह चाहती तो खुद मुक्त हो सकती थी परंतु वह चाहती थी, सेवा हो। कभी-कभी दादी की कंडीशन ऐसी होती कि डॉक्टर सोचने लग जाते थे कि हम क्या करें? फिर कभी कोई ट्रीटमेंट देकर जाते और देखते कि दादी दूसरे दिन बिल्कुल ठीक है, तो कहते कि 'यह हो नहीं सकता कि इतनी जल्दी ठीक हो जाए।'

दादी चारों धर्मों की सेवा कर के गई

दादी को कोई कर्मभोग नहीं था, नहीं तो एक सूई लगने पर भी कितना दर्द होता है, दादी ने कभी चूँ तक नहीं किया। बाबा ही सब कुछ कराता है। दादी चारों धर्मों की सेवा कर के गई। सब धर्म वालों ने दादी की सेवा की। सभी डॉक्टर्स की सेवाएं की। आज भी सभी डॉक्टर्स बाबा को मानते हैं। कई तो अभी से फोन कर रहे हैं कि हमको भी मेडिटेशन सीखना है और अपने जीवन में परिवर्तन लाना है, ज्ञान में हमें चलना है। ■■■

दादी हृदयमोहिनी जी हर बात को सकारात्मक रूप से लेते थे

ब्रह्माकुमार गोपाल भाई, शान्तिवन

मैं सन् 1966 में ब्रह्माबाबा के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान में आया, तब मेरी उम्र 20 साल की थी। मैं हर 15 दिन में बाबा से मिलने मधुबन आ जाता था। बापदादा की पहली पधरामणि 21 जनवरी, 1969 को जब गुलज़ार दादी के तन में हुई तब भी मैं वहीं था। उस वक्त मैं बहुत दुख में था क्योंकि ब्रह्माबाबा से बहुत प्यार था। लेकिन 21 जनवरी की अव्यक्त वाणी ने जैसे जादू कर दिया और फिर जब मैं दिल्ली, कमला नगर सेवाकेन्द्र में गया तो गुलजार दादी ने नॉनस्टॉप 10 मिनट तक मुझे दृष्टि दी और मैं बैठा रहा। उस दृष्टि में इतना स्नेह, इतनी शक्ति थी, ऐसा लग रहा था जैसे मैं ब्रह्माबाबा से मिल रहा हूं और तभी निश्चय किया कि मुझे दादी के साथ ही रहना है। जब मैं ज्ञान में नहीं था परन्तु ब्रह्माबाबा की मुझे दृष्टि मिली थी तो मैं उनका हो गया था, ऐसे ही दादी की इस दृष्टि से मेरा दादी के साथ एक कनेक्शन जुड़ गया। मैंने दादी को स्टेशन से लाने और ले जाने की सेवा संभाल ली।

किसी सुविधा की चाह नहीं

जब कभी दादी प्रकाशमणि जी का फोन आता था कि 10, 15 भाई-बहनें मधुबन में आ गए हैं, बाबा से मिलना है तो आप आ जाओ। तो मैं कहता था कि मैं जाऊंगा दादी को स्टेशन छोड़ने, मुझे अच्छा लगता था। उस वक्त किसी के पास कार नहीं थी, मैं ऑटो रिक्शा में गुलजार दादी को स्टेशन ले जाता था। दादी बाबा का रथ थी परंतु दिल्ली से आबू अकेले, बिना रिजर्वेशन के लेडीज कंपार्टमेंट में जाती थी, कोई भाई या बहन साथ में नहीं होते थे। मैंने देखा तो कहा, 'दादी, यह गाड़ी साफ-सुथरी नहीं है, दूसरी गाड़ी में मैं अगली बार आपका रिजर्वेशन फर्स्ट या सेकंड क्लास में करा दूंगा।' दादी ने कहा, 'नहीं, नहीं, यहां गरीब लोग होते हैं, जो हमारी बातें सुनते हैं, उस गाड़ी में तो लोग सिगरेट आदि पीते हैं और वे ईश्वरीय ज्ञान को मानते भी नहीं हैं।' मैंने कहा, 'मैं साथ में चलूंगा और उन्हें प्यार से बोल कर उनकी सिगरेट बंद करवा दूंगा।' तो बोला, 'नहीं, मुझे यही ट्रेन अच्छी लगती है।' जैसे दादी को कोई चाह नहीं थी किसी सुविधा की, बिल्कुल खुशनसीब खुशनुमा चेहरा।

दादी से ऐसे वाइब्रेशंस आते थे जैसे कोई बर्फ का पहाड़ हो। मैं बहुत फास्ट स्वभाव का व्यक्ति था परंतु दादी जी के वाइब्रेशन से मेरे सारे संकल्प शांत हो जाते थे। मैं दादी को कभी कोई बात सुनाता कि दादी, इसमें यह अवगुण है, तो कहती थी कि 'हां, इसमें यह गुण है।' अवगुण शब्द दादी के मुख से नहीं निकलता था। किसी की बुराई उनको देखनी भी नहीं आती थी और उनसे बहुत अनोखा अनुभव होता था।

बाबा के संदेश से सफलता

एक बार इंदिरा गांधी स्टेडियम में बहुत बड़ा प्रोग्राम रखा था जिसमें राष्ट्रपति जी को आना था और उन्होंने लिखित में भी दे दिया था कि वे आएंगे। यह खबर सब तरफ पहुंच चुकी थी। परंतु, प्रोग्राम के चार-पांच दिन पहले ही राष्ट्रपति भवन से चिट्ठी आई कि कुछ सुरक्षा नियमों की वजह से राष्ट्रपति प्रोग्राम में नहीं आ पाएंगे। उस वक्त पांडव भवन के गार्डन में एक मीटिंग रखी गई, जिसमें दादी प्रकाशमणि जी, जगदीश भाई जी, बृजमोहन भाई जी और हम सब बैठे थे। गुलज़ार दादी को बुलाया गया। प्रकाशमणि दादी ने कहा, 'गुल, तुमने

सुना, राष्ट्रपति ने प्रोग्राम में आने से मना कर दिया है।' गुलज़ार दादी ने कुछ नहीं कहा, चुप बैठे रहे। दादी ने फिर कहा, 'तुमने सुना, मैंने क्या कहा, राष्ट्रपति ने मना कर दिया है।' तब दादी ने कहा, 'हां, मैंने सुना' जैसे दादी के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी। प्रकाशमणि दादी ने पूछा कि 'फिर क्या करना है?' तो गुलजार दादी ने कहा कि राष्ट्रपति के भाग्य में नहीं है तो हम क्या कर सकते हैं। हम सब तो चिंता में थे कि राष्ट्रपति नहीं आ रहे हैं परंतु दादी का जवाब सुनकर हम सब खुश हो गए, दादी की स्थिति ऐसी होती थी। फिर बड़ी दादी ने गुलज़ार दादी को कहा कि 'बाबा से पूछो कि क्या करना चाहिए', अभी भी चार-पांच दिन हैं। दादी ने बाबा से संदेश लाया कि अखंड योग करो फिर सिक्योरिटी इंचार्ज से मिलो। तो दादी ने पूछा, 'बाबा ने क्या बताया, राष्ट्रपति आएँगे या नहीं?' तो उन्होंने कहा कि 'वह बाबा ने नहीं बताया।' फिर हमने पांडव भवन में रात 2:00 बजे तक अखंड योगभट्ठी रखी और सिक्योरिटी इंचार्ज से भी मिले। जिस वजह से सिक्योरिटी वालों ने मना किया था वह वजह हल हो गई थी। सिक्योरिटी वालों ने स्वीकृति दे दी और राष्ट्रपति प्रोग्राम में आ गए। इस तरह अखंड योग से और बाबा के संदेश से कई कार्य सफल हो जाते थे।

हर परिस्थिति में 'नो प्रॉब्लम'

दादी के साथ यात्रा करने में भी बड़ा आनंद आता था। एक बार हम लंदन जाने के लिए एयरपोर्ट पहुंचे, चेक इन आदि हुआ, 15 मिनट में बोर्डिंग करनी थी, हम सब बैठे थे तो अनाउंसमेंट हुई कि 'फ्लाइट एक घंटा लेट है।' मैंने पूछा, 'दादी, आपने सुना' तो दादी ने कहा, 'हां सुना।' उन दिनों लेटनाइट अंतर्राष्ट्रीय फ्लाइट चलती थी लेकिन देखा कि दादी को जरा-सा भी कोई संकल्प नहीं चला। मैंने कहा, 'दादी, मैं जयंती बहन को फोन कर देता हूं कि फ्लाइट एक घंटा देरी से है', तो कहा, 'वह तो पूछ कर ही एयरपोर्ट पर आएंगे ना, फोन करने की कोई जरूरत नहीं है।' परंतु मैं अपने आप को रोक नहीं सका और फोन कर दिया। आधे घंटे बाद फिर अनाउंसमेंट हुई कि फ्लाइट और एक घंटा लेट है। तो मैंने दादी से कहा, 'दादी, फ्लाइट अब एक घंटा और लेट हो गई है' तो

दादी ने कहा, 'हां सुना।' बस, और कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई और बात नहीं की कि दो घंटे कैसे बैठे रहेंगे। मैंने कहा, 'मैं पूछ कर आऊँ, यहां आपके लिए थोड़ी लेटने की कोई सीट मिल जाए' तो कहा, 'नहीं, नहीं, यह बहुत अच्छी आरामदायक सीट है।' यानि कि बिल्कुल नो प्रॉब्लम। हमको प्रॉब्लम लगती थी पर दादी को कोई प्रॉब्लम नहीं और उन्हें देख कर के हम भी बिल्कुल शांत, निश्चिंत हो जाते थे कि कोई प्रॉब्लम नहीं है।

एक बार हमें फ्लाइट चेंज करनी थी। इसके लिए आधा घंटा लाइन में खड़ा होना था। दादी को एक जगह बिठाकर मैं टिकट के लिए एक ऑफिस में गया। थोड़ी देर में मैंने देखा कि एक ऑफिसर दादी के पास कुछ बातें कर रहा है, तो मैं दादी के पास पहुंचा। दादी उससे बोली, 'नो इंग्लिश'। वह ऑफिसर हम सबको एक कमरे में बैठा कर खुद गया और टिकट पर स्टैंप आदि लगाकर, नेक्स्ट फ्लाइट तक हम सभी को छोड़ने आया। कई बार हमने देखा कि दादी की फ्लाइट भी अपग्रेड हो जाती थी।

प्रकृति दासी

प्रकृति भी दादी की दासी थी। एक बार ऑस्ट्रेलिया में सिडनी रिट्रीट सेंटर का उद्घाटन करने दादी को बुलाया गया था। वहां एक महीने से लगातार बहुत बारिश हो रही थी जिस वजह से सब तरफ पानी-पानी हो गया था। मौसम विभाग की चेतावनी भी यही थी कि बारिश रुकने वाली नहीं है लेकिन अचानक चार दिन पहले ही बारिश रुक गई और धूप निकल गई जिस वजह से बहुत अच्छा वातावरण हो गया और बहुत अच्छा उद्घाटन हुआ। मेलबॉर्न से सिडनी एक घंटे की फ्लाइट है। वह

बहुत ही रफ फ्लाइट थी क्योंकि बादल बहुत घने थे और पायलट को तेजी से उन्हें क्रॉस करना था जिस वजह से फ्लाइट को झटके लग रहे थे और हम उछल रहे थे अपनी सीट पर। मैंने दादी से पूछा, 'आपको कोई डर तो नहीं लग रहा?' तो कहा, 'नहीं, नहीं, यह तो हम झूले में झूल रहे हैं ना, खाना हमारा हजम हो रहा है।' वह 3:00 बजे की फ्लाइट थी। दादी में निर्भयता का भी गुण था और हर चीज को पॉजिटिव में लेते थे दादी।

कई बार महसूस किया कि ऑलमाइटी बाबा भी दादी के लिए पहले से ही इंतजाम करके रखता था। सन् 1996 में जब मानेसर बना तो मैंने अखबार में पढ़ा था कि प्रदूषण की वजह से तबीयत खराब होती है तो मुझे संकल्प चला कि दादी को दिल्ली के इस प्रदूषण से कहीं दूर रखना चाहिए। उसी दौरान एक जमीन मुफ्त में मिली तो सोचा, यहां दादी के लिए एक फार्महाउस बनाएँ लेकिन दादी ने कहा कि 'मैं तो नहीं रहूंगी।' लेकिन बाबा को पता था कि 6, 7 महीने बाद दादी की तबीयत खराब होने वाली है और बाबा मुझ द्वारा 24 घंटे सेवा लेकर के वह फार्महाउस जल्दी से जल्दी तैयार करवा रहा था जैसे कि इसकी कोई बहुत बड़ी ओपनिंग होने वाली हो।

गर्मी का मेवा

मानेसर में बीच-बीच में बिजली जाती रहती थी। एक बार 44 डिग्री तापमान था और बिजली चली गई। हमारे सोलर और जनरेटर दोनों फेल हो गए थे। दादी के पास गया तो दादी को बहनें हवा कर रही थीं। हमने कहा, अब क्या करें? दादी ने कहा, 'कोई बात नहीं।' हमने कहा, 'दादी, आप तो पसीना-पसीना हो रहे हैं।' तो कहा, 'यह तो गर्मी का मेवा है ना, आप सब सो जाओ।' इसके बाद दादी को एक मिनट के अंदर नींद आ गई। ऐसी बिल्कुल नि:संकल्प अवस्था में आराम से सो गई। ■■■

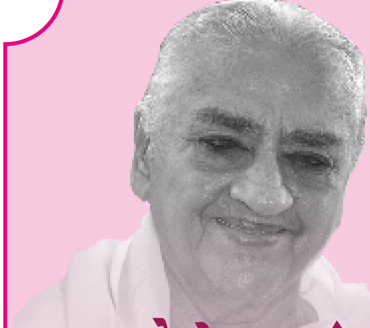

कैसे कह दूं वो नहीं रहे ...

■■■ ब्रह्माकुमार सतीश, आबू पर्वत

कैसे कह दूं वो नहीं रहे, हर ओर हमें जो दिखते हैं
दिनरात जिन्हें हम सुनते हैं, वो रूप बदलकर रंग बदल
सपनों में भी आ मिलते हैं, **कैसे कह दूं वो नहीं रहे ...**

कुछ लोग तसल्ली देते हैं, नहीं सदा किसी को रहना है
दिल कहे न इनका यकीं करो, लोगों का काम ही कहना है
ये क्या जाने जो दिल में हैं वो, अमर हैं वो नहीं मरते हैं
कैसे कह दूं वो नहीं रहे ...

तुमसे अच्छा सुनने वाला, तुमसे अच्छा कहने वाला
कहीं देखा न दादी तुमसा, मेरे गीतों को सुनने वाला
शब्दों, छन्दो, लय, भावों में, हम तुम्हें देखते रहते हैं
कैसे कह दूं वो नहीं रहे ...

संकल्प, समय सब सेवा में हर साँस करता भलाई है
जो खूब जिए जीवन से हमें जीने की कला सिखाई है
जीवन राहें रोशन करने जो तूफानों में जलते हैं
कैसे कह दूं वो नहीं रहे ...

ओ दादी तुम हो यहीं कहीं जब चाहोगी मिलने आओगी
वैसे भी किसके रोकने से तुम रुकी नहीं रुक पाओगी
तुम कालजयी हो, मृत्युन्जय युगनायक शाश्वत रहते हैं
कैसे कह दूं वो नहीं रहे ...

गुलजार दादी नम्बरवन संदेशी थी

ब्रह्माकुमारी चक्रधारी बहन, शक्ति नगर, दिल्ली

जब हम ईश्वरीय ज्ञान में आए तो यह यज्ञ रूपी गुलशन आदिरत्नों से खिला हुआ था। उनकी दिव्यता, उनकी रूहानियत बहुत सुंदर रीति से इस उपवन को सुशोभित करती थी। अब फिर एक-एक करके कई पंछी अपनी संपन्नता की स्थिति को प्राप्त कर, हर्षित होकर अगले पार्ट में जा रहे हैं। उनका जाना हम सबको संकेत देता है कि 'तैयार रहो, अवस्था को मजबूत बना लो।' धीरे-धीरे इस उपवन में कई नए-नए पुष्प खिलेंगे और पुराने पुष्पों को बाबा कुछ अन्य कार्यों में प्रयोग करेगा, वह दृश्य हम सबको दिखने में आ रहा है। हम सबमें सबसे सुंदर वह पुष्प, जो अनेकों को प्यारे बाबा से मिलन बनाने का सौभाग्य प्राप्त कराता था, हम सबसे साकार रूप से ओझल हो वतनवासी बन गया।

दादी जी कोर्स के दौरान अच्छी से अच्छी बातें सुनाया करती थी

विश्व के प्रथम सेवाकेंद्र कमला नगर, दिल्ली में मेरी प्रारंभिक ईश्वरीय सेवा आरंभ हुई। जब मैं वहां आई तब गुलजार दादी जी, जगदीश भ्राता जी, एक भंडारे की माता और लिटरेचर के दो भाई, वहीं रहा करते थे। त्रिमूर्ति मैगज़ीन निकलती थी और जगदीश भाई जी कोई ना कोई कार्य में बहनों को व्यस्त रखते थे ताकि ज्ञान में इनकी रुचि बनी रहे। तो मेरा जाना वहाँ होता था परंतु मैं क्लास वहाँ नहीं करती थी। ज्ञान का कोर्स करने के लिए मुझे कमला नगर सेंटर पर जाने का सुझाव दिया गया था। उस समय सुदेश बहन, जो वर्तमान समय जर्मनी में हैं, गुलजार दादी के साथ रहती थी। अभी दो-तीन दिन ही कोर्स के हुए होंगे कि हमारी आदरणीया मम्मा दिल्ली में आई और उनसे मिलन हुआ। मम्मा ने मुझे चक्रधारी कहकर प्रथम बार बुलाया। नाम बदलते ही मेरा दिव्य जन्म सेवाओं का शुरू हुआ। गुलजार दादी जी कोर्स के दौरान रोज पूछती थी कि आज क्या सुना और कुछ ना कुछ अच्छी से अच्छी बातें सुनाया करती थी।

दादी ने पूछा, क्या आप मेरे साथ रहेंगी?

एक बार गुलजार दादी, बड़े प्यार से अपनी बाँहें मेरे गले में डालकर, हॉल से होते हुए बालकनी क्रॉस करके अपने कमरे में लेकर गई और कहा कि मैं अकेली हूं (उनके पास सुदेश बहन के बाद एक राज बहन थी, वह दूसरे सेवाकेंद्र पर चली गई थी), तो क्या आप मेरे साथ रहेंगी? मैंने इसे सुअवसर समझा, घर के बंधन को नहीं देखा। मैंने कहा, मैं अवश्य रहूंगी। उन्होंने पूछा, कब आ जाओगी? मैंने कहा, कल ही आ जाऊंगी। दूसरे दिन ही मैंने बैग तैयार किया और दोपहर लगभग 2:30 बजे मैं दादी के कमरे में पहुंच गई। दादी विश्राम कर रहे थे। मैंने पूछा, मुझे क्या करना है? दादी ने कहा, मेरी चारपाई के नीचे एक चटाई है, वह निकालो और आप भी विश्राम कर लो। मुझे वह चटाई भी ऐसी लगी कि कितना सुंदर गलीचा मिला है जिस पर मैं सोने जा रही हूं।

यही सर्वश्रेष्ठ जीवन है

मैं थोड़े से कपड़े लेकर गई थी। वहां एक दीवार पर सीमेंटेड चार खाने बने हुए थे। दादी ने कहा, एक खाने में मेरे कपड़े हैं, एक में जगदीश भ्राताजी के कपड़े हैं, एक में आप अपने कपड़े रख लो, एक में भंडारे वाली के कपड़े हैं। यही हमारी अलमारी थी, उसके आगे कोई दरवाजा या पर्दा नहीं था। ऐसे ही उसमें कपड़े रखे हुए थे। उसी दिन दादी ने कहा कि अगर आपको जमीन पर नींद ना आए तो खटिया मैं आपको दे सकती हूं। मैंने

कहा, नहीं दादी, मैं जमीन पर सो सकती हूं। दादी ने कहा कि जैसे बाकी सब कपड़ों में पानी लगाते हैं और तह करके अच्छी तरह मेरी खटिया की दरी के ऊपर रख देते हैं, उसके ऊपर चादर बिछ जाती है और फिर मैं रात को सोती हूं तो सब कपड़े प्रेस हो जाते हैं और प्रात: वही कपड़े सबको पहनने होते हैं। इसलिए आप भी अपने कपड़े ठीक से तह करके इसके नीचे रख देना। मुझे कभी संकल्पमात्र में भी लौकिक जीवन की, इस अलौकिक जीवन से तुलना नहीं आई। ऐसा लगता था कि यही सर्वश्रेष्ठ जीवन है, इससे बढ़कर जीवन क्या हो सकता है। यह भावना हममें इसलिए जगी क्योंकि हमारे बड़ों के जीवन में जो त्याग था, जो तप था, उस ने हमारे जीवन को प्रेरित किया था। उस समय दादी जी ने यही मुझे कहा, आप जो भी कर सकते हो, वह आप कर लो। मुझे नहीं पता था, घर में कभी नहीं सीखा था कि क्या करना है, क्या नहीं करना है लेकिन दादी ने कभी मुझे शब्दों से नहीं कहा कि यह करना है या नहीं करना है केवल मात्र में उन्हें कर्म करते हुए देखा और फॉलो करना शुरू कर दिया कि छोड़ दीजिए यह काम, मैं कर लूंगी। कभी उन्होंने शब्दों से नहीं मुझे सिखाया लेकिन कर्म करके सिखाया। ऐसी महान विभूतियां जिन्होंने जो कुछ बाबा से सीखा, अपने जीवन में संजोया और जो छोटी बहनें उनके संबंध-संपर्क में आई उनको बहुत कुछ सिखा दिया।

ऑलमाइटी बाबा गुलजार दादी के द्वारा बहुत सुंदर रोल अदा करते थे

आज कई पूछते हैं कि पहले बाबा के होते दीवाली या इस तरह के पर्व कैसे मनाए जाते थे। पहले की दीवाली, एक अलौकिक दीवाली होती थी। प्रात: 9:00 बजे तक सब घर से फारिग होकर सेवाकेंद्र पर आ जाते थे कि आज दीवाली का दिन है और गुलजार दादी नंबरवन संदेशी थी। साकार तन में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का आना, चलना, उनका उठना-बैठना, खाना-पीना, ये सब दृश्य ऑलमाइटी बाबा अपने रथ गुलजार दादी के द्वारा हम लोगों को दिखाते थे और हमने उस समय यह अनुभव किया कि सचमुच त्यौहार मनाना किसको कहते हैं। सारी रात बीत जाती थी, पता ही नहीं चलता था कि सवेरा कब हो गया। इस प्रकार एक दिव्य, अलौकिक बहुत सुंदर ईश्वरीय पालना प्यारे पिता ने इस साकार रथ द्वारा हम सबको दी। जन्माष्टमी के दिन भी बहुत सुंदर दृश्य होता था, छठी भी मनाई जाती थी। जो छोटे-छोटे सेंटर खुलते थे तो सभी को पता रहता था कि कमला नगर सेंटर पर छठी मनाई जाएगी और छठी के दिन किशोर आएगा और कैसे सबसे आके खेलेगा। ऑलमाइटी बाबा गुलजार दादी के द्वारा बहुत सुंदर रोल अदा करते थे। नई दुनिया कैसी होगी, वहां के राजकुमार-राजकुमारी कैसे बोलते होंगे, वहां का आपसी प्यार और व्यवहार किस प्रकार का होगा, ये सब दृश्य बाबा ने दिखाए। गुलजार दादी बहुत सिंपल थे, शांत रहने वाले थे। दादी ने कभी किसी के मुंह में गिट्टी नहीं खिलाई, ना किसी को भाकी पहनी। गुलजार दादी गंभीर आत्मा थी, उन्होंने जो ज्ञान की पालना दी, जो ज्ञान की गहराई सब को सुनाई उससे सब लोग बहुत आकर्षित होते थे। दादी जी को हमने कभी एक सेकेंड के लिए भी खाली बैठे हुए नहीं देखा। जैसे बाबा कहते हैं कि चक्तियां लगाओ लेकिन फटा कपड़ा नहीं पहनो। गुलजार दादी को फटा हुआ कपड़ा सिलाई करते भी देखा और उनसे ऐसा करना सीखा भी।

उस समय कॉमर्स मिनिस्टर, मिस्टर थॉमस थे। उन्होंने फोन किया कि मुझे आपके कमला नगर सेंटर पर आना है। हमने सोचा, फ्रॉड होगा, ऐसा मिनिस्टर जिससे हम अपॉइंटमेंट लेने जाते हैं और देते नहीं और ये फोन करके एड्रेस मांग रहे हैं। हमने एड्रेस बता तो दिया परंतु मन में शक रखा। वे उसी शाम तीसरी मंजिल पर सेंटर पर पहुंच गए और मैंने देखा, वे गुलजार दादी जी के बार-बार दर्शन कर रहे थे। ऐसा ही लग रहा था कि जैसे भक्ति में कहा जाता है कि यदि आपको कोई साक्षात्कार हो जाए तो उसका वर्णन नहीं करना अन्यथा पुन: वह साक्षात्कार नहीं होगा। ऐसा प्रतीत होता था कि उनको दादी जी से अवश्य कोई साक्षात्कार जैसी प्रेरणा मिली जो वह आत्मा स्वयं ही बिना अपॉइंटमेंट के प्यारे बाबा के घर में आई और बाबा के बच्चों से आकर के मिली। ■■■

दादी हृदयमोहिनी बहुत अंतर्मुखी और नम्रचित्त थी

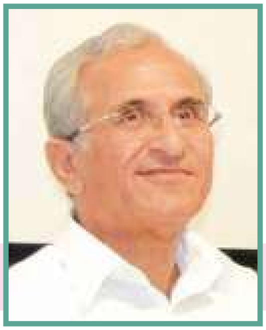

ब्रह्माकुमार डॉ. प्रताप भाई, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

एक बार दादी हृदयमोहिनी हॉस्पिटल आई थी तो भाइयों ने गीत गाया, 'दादी आपकी आंखों में बाबा नजर आते हैं।' हम सबको रूहानी दृष्टि से भरपूरता और संपन्नता का अनुभव कराया, यह कमाल दादी की ही थी।

दादी बिल्कुल बेफिक्र और निश्चिंत थी

दादी सदा उस कॉन्शियस में रहती थी कि 'मैं भगवान का रथ हूँ।' दादी बहुत सिंपल और इनोसेंट थी, उसका आधार प्योरिटी थी। उन्होंने बाबा को संपूर्ण रीति समर्पण किया था, जैसे बाबा उन्हें तैयार कर रहा था। दादी का दृष्टिकोण सदा बेहद का रहता था। सन् 1988 में जब दादी को कैंसर हुआ था तो डॉक्टर ने कहा था कि दादी डेढ़ या दो साल ही रहेंगे। जब दादी को यह बताया गया तो दादी ने कहा कि 'हम तो कल भी जा सकते हैं।' दादी बिल्कुल बेफिक्र और निश्चिंत रहती थी। दादी का पद भले ऊंचा था परंतु उन्होंने पुरुषार्थ पर पूरा-पूरा अटेंशन दिया, दादी ने अपनी मेहनत की। हम लोग तो दादी और अव्यक्त बाबा में अंतर भी नहीं कर पाते थे। दादी के पास जाते तो वहां भी बाबा की ही भासना आती थी। उनका यह आंतरिक पुरुषार्थ ही देखने जैसा था। लंबे समय का पुरुषार्थ हमने दादियों में देखा।

सब कुछ बाबा को समर्पित

दादी बहुत अंतर्मुखी और नम्रचित थी। कभी-कभी दादी पास से गुजर जाती थी और हमें पता भी नहीं चलता था। दादी ने अपना रथ भगवान को ऑफर किया तो उसके लिए कितनी अपने पर मेहनत की होगी। बाबा रात-रात भर बैठे रहते तो कभी दादी ने प्रश्न नहीं उठाया, समर्पित तो समर्पित। कौन एक ही पोजिशन में इतने घंटों तक बैठ सकता है? दादी ने जैसे स्वयं का सब कुछ तन, मन, शक्तियां बाबा को समर्पण कर दिया, शरीर की व्याधि को भी नहीं देखा, इस वजह से भी सभी का दादी से बहुत प्यार था। डॉ. अशोक मेहता बताते हैं कि जब वे ज्ञान में नहीं थे और दादी का पहले-पहले ऑपरेशन किया और दादी के कमरे में जाते थे तो दादी उनसे पूछती थी कि 'आप कैसे हो?' और टोली देती थी।

एक लाइन में ही सारा सार

मैं कभी सोचता था कि हॉस्पिटल की सेवा छोड़कर अब ईश्वरीय सेवा करूं तो दादी कहते थे, 'आप कर सकते हो ना, पहले आप समान तैयार करो, जब आप समान तैयार करोगे तभी छुट्टी मिलेगी।' दादी की एक लाइन में ही सारा सार समाया हुआ होता था। एक बार साकार बाबा को भी मैंने पत्र लिखा था, 'बाबा, मुझे पढ़ना है।' तो बाबा ने भी एक लाइन में ही उत्तर लिखा था, 'भल पढ़ो, बाप का नाम बाला करना।' दादी की एक लाइन में ही सारा सार समाया होता था। हम कभी दादी के साथ हॉस्पिटल ट्रस्ट आदि की मीटिंग करते थे या कोई उलझन होती तो दादी यही कहती थी कि 'आपस में मिलकर राय करो।' एक बार गोपाल भाई ने सुनाया कि एक समय दो प्रोग्राम हो गए और दोनों दादी को निमंत्रण दे रहे थे तो दादी ने कहा, 'आप लोग आपस में निश्चित कर दो, दादी कैसे कहेगी कि मुझे यहां जाना है।'

दादी से शीतलता की महसूसता आती थी

दादी के अंतिम संस्कार के दिन भी गोपाल भाई सुना रहे थे कि दादी जैसे बर्फ का पहाड़ थी। दादी से शीतलता व नि:संकल्प अवस्था की महसूसता सदैव आती थी। जैसे स्वच्छता को स्वच्छता आकर्षित करती है, पवित्रता को पवित्रता वैसे ही दादी को भी फरिश्ते बहुत पसंद थे। मैं कभी-कभी दादी के कमरे में जाता था तो देखता था, वहां फरिश्तों के चित्र लगे हुए हैं। बाबा कहते हैं कि 'व्यर्थ संकल्प ना हो, वही संकल्प चले जिसको कार्य में लाना हो', तो दादी इस बात का स्वरूप थी, कभी संकल्प करती ही नहीं थी, जहां बिठा दो, वहीं बैठ जाती थी।

कमजोरी से पार ले जाती थी

कभी कोई बहन आकर सुनाती कि दादी, यह भाई बहुत गुस्सा करता है। तो दादी कहती, यह भी उसका गुण है ना। दादी अवगुण शब्द ही नहीं यूज करती थी और कभी दादी ने किसी को समझाने की कोशिश नहीं की, कभी किसी की कमजोरी पर ध्यान नहीं खिंचवाया परंतु बाबा की बात सुना कर उस कमजोरी से ही उसे पार ले जाती थी, दादी में यह विशेषता थी।

दादी बाबा के संग रहती थी

दादी तो जैसे सदा बाबा में मर्ज रहती थी, बेहद का दृष्टिकोण था। बॉडी में क्या हो रहा है, वह कारण नहीं पता चल रहा था तो बार-बार टेस्ट होते रहे लेकिन जब शरीर की व्याधि बढ़ जाती थी तो दादी अपने आपको शरीर से अलग कर लेती थी। दादी ने बिल्कुल ही अपने आप को बाबा को समर्पण कर दिया था। दादी बाबा के संग रहती थी, बाबा को सदा अपने साथ रखती थी।

दादी के कमरे में गहन शांति

उस रात मैं दादी से मिलकर अपने कमरे में गया। दूसरे दिन 8:15 बजे नाश्ता करने बैठा ही था कि अस्पताल से कॉल आया कि तुरंत आ जाओ। मैं पहुंचा, दादी के कमरे में बहुत गहन शांति थी। दादी के अव्यक्त होने का समाचार सुनकर मुंबई के कई भाई-बहनें हॉस्पिटल में आए तो भी सैफी अस्पताल वालों ने बहुत सहयोग दिया। उन्होंने दादी को रॉयल सूट दिया हुआ था, वेंटिलेटर, डायलिसिस, एंडोस्कोपी, कोलोनोस्कोपी आदि सारी व्यवस्था उन्होंने वहीं करके दी हुई थी जैसे दादी के प्रभाव में वे सब कर रहे थे।

मास्टर बाबा

कोविड के समय में वे डॉक्टर दादी के लिए सब्जियां भी ले आते थे। दादी के प्रति उनकी इतनी भावना रहती थी, वह भी दादी के धारणा स्वरूप जीवन के आधार पर। दादी हमारे सामने एक उदाहरण छोड़ गई, 'वारिस स्थिति का, बेहद की स्थिति का।' जैसे बाबा कहते हैं ना, आप मास्टर हो, तो दादी मास्टर बाबा बनकर गई।

नजरों में जादू

दादी जी शब्द बहुत कम यूज करती थी लेकिन उनकी नजरों से ही वरदान मिल जाता था। दादी बहुत प्यार और नम्रता से बात करती थी और सबको सम्मान देती थी। दादियों ने कठिन परिस्थितियों का सामना किया लेकिन कितना अटूट विश्वास था उनका ज्ञान पर, ड्रामा पर।

त्रिकालदर्शी बनो

एक बार दादी से किसी ने पूछा कि अंतिम स्थिति का पुरुषार्थ क्या हो? तो दादी ने एक ही लाइन में उत्तर दिया, 'त्रिकालदर्शी बनो।' जब हम आदि-मध्य-अंत को समझकर कार्य करते हैं तो हमें संपन्नता का अनुभव होता है, पश्चाताप नहीं करना पड़ता। फिर किसी ने पूछा दादी से कि बाप समान कैसे बनें? दादी ने कहा, देहभान से परे हो जाओ तब बाप समान बन जाएंगे।

साधारण कर्म में भी अलौकिकता

दादियों के साधारण कर्म में भी अलौकिकता थी, रूहानियत थी। एक बाप दूसरा न कोई, यह हमने दादियों में देखा। दादियों को बाहर की दुनिया में बिल्कुल भी इंटरेस्ट नहीं था। उन्हें बाबा पर अटूट विश्वास था। उन्होंने अपने आपको रियलाइज किया, पक्के वारिस बन गए। हमारे सामने ये रोल मॉडल हैं, हम इन्हें फॉलो करें तो अपनी संपन्न अवस्था बनाने में मदद मिलेगी। दादियों के जीवन से छोटी-छोटी बातें सीखने को मिलती हैं। जो बाबा ने एक बार कह दिया, दादियों का लक्ष्य रहता था कि वह करना ही है।

योग कैसे बढ़ाएं?

दादी ने एक बार क्लास कराई, कहा, चार पेज की पूरी मुरली याद नहीं रहती, तो सार तो याद रहता है, क्वेश्चन तो याद रहता है, वह भी याद नहीं रहता तो वरदान याद करो, वरदान नहीं तो स्लोगन याद करो, अगर स्लोगन भी याद नहीं रहता तो बाबा तो याद रहेगा। फिर एक बार किसने कहा, योग कैसे बढ़ाएं? तो दादी ने कहा कि अभी जैसे हम दिन में तीन बार भोजन करते हैं या चाय-पानी पीते हैं, ट्रैफिक कंट्रोल होता है तो उस वक्त बाबा को याद करते रहें तो बहुत जमा हो जाएगा। ऐसे सहज शब्दों में दादी जी बताती थी।

बाबा और सभी वरिष्ठ हमारे साथ हैं, सिर्फ बुद्धि की लाइन क्लियर रखनी है, तभी हम टचिंग कैच कर पाएंगे। ■■■

अनेकों से मिलते भी दादी हृदयमोहिनी सदा न्यारी-प्यारी रहती थी

ब्रह्माकुमारी संतोष बहन, मुंबई (सायन)

जिस दिन साकार बाबा अव्यक्त हुए उस दिन हम बच्चों को बड़ा शॉक लगा क्योंकि हम सभी ने तो यही समझ रखा था कि सतयुग आने तक बाबा हमारे साथ में रहेंगे और विश्व परिवर्तन भी हम बाबा के साथ-साथ देखेंगे। जब अचानक यह संदेश मालूम पड़ा तो थोड़ा आंखों के सामने अंधेरा-सा छा गया। परंतु उसके बाद अव्यक्त बापदादा ने 21 जनवरी को आकर गुलजार दादी के द्वारा मुरली चलाई और हर एक बात को एकदम स्पष्ट कर बताया। बाबा ने हमें यह भी अनुभव कराया कि किसी के बाप को अगर ऊंचाई की डिग्री मिलती है, उसकी इंप्रूवमेंट होती है तो बच्चों को खुशी होती है, तो बाबा साकार से अव्यक्त बने तो उनकी डिग्री ऊंची हो गई तो बच्चों को इसकी खुशी होनी चाहिए।

दादी कम बोलती थी क्योंकि सोचती ही कम थी

बाबा ने गुलजार दादी का ही तन क्यों चुना क्योंकि दादी जी की नि:संकल्प अवस्था, पवित्रता, निर्मल वाणी और निमित्त भाव था। दादी की वाणी में कभी भी कोई ऐसा शब्द नहीं होता था जो सामने वाले को चुभे। दादी का रथ जब बापदादा ने चुना, दादी ने अथक होकर के 12-14 घंटा एक ही पोज में बैठकर के सेवा की। दादी अनेकों से मिलते हुए भी जैसे सबसे न्यारी-प्यारी रहती थी। जैसे ब्रह्माबाबा के नेत्रों से हमने ऑलमाइटी बाबा को देखा वैसे ही दादी के नेत्रों से हमने बापदादा को देखा, उनकी अनुभूति की। दादी बहुत नम्रचित्त थी। उन्हें कभी भी किसी भी बात का अहंकार नहीं आया। हमने दादी की कभी ऊंची आवाज नहीं सुनी। बहुत कम बोलती थी क्योंकि सोचती ही कम थी। जिनका संकल्पों के ऊपर कंट्रोल होगा, उनका वाणी और कर्मों के ऊपर भी कंट्रोल रहता है। सभी ब्रह्मावत्स चातक की तरह इच्छा रखते थे कि हम दादी के मुख से कोई ना कोई महावाक्य सुनें क्योंकि दादी के मुख से निकलने वाला वाक्य सामने वाले के लिए वरदान सिद्ध हो जाता था। हम तो दूर मुंबई में रहते थे परंतु दिल नजदीक होने के कारण और बापदादा उनके तन में आने के कारण समीपता की भासना आती थी।

दादी सबको समान प्यार देती थी

भगवान को भगवान इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसमें पक्षपात नहीं, ऐसे ही हम ने देखा कि बाबा के साथ रहते-रहते बाबा के जो भी गुण थे उनका रंग दादी के ऊपर लग गया था। दादी के मन में भी किसी के लिए कोई पक्षपात नहीं था। उनके लिए सब समान थे। सबको समान प्यार देती थी, रूहानी पालना देती थी। दादी को यही रहता था कि सब को साकार बाबा की पालना मिले, किसी को ऐसा न लगे कि बाबा चला गया है। हमारे मन में जो संकल्प था कि साकार बाबा चला गया, वह कमी दादी की पालना द्वारा पूरी हो गई।

दादी का बहुत विशाल दिल था

कभी भी दादी किसी की बात वर्णन नहीं करती थी, जो भी बात होती उसे फुलस्टॉप लगा देती थी इसलिए वह सदा नि:संकल्प रहती थी। दादी का बहुत विशाल दिल था। दादी प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तो यही है कि हम भी दादी के समान, दादी के गुणों को अपने जीवन में धारण करते हुए, अथक होकर के, बापदादा से बेमुख आत्माओं को सम्मुख लाएँ और जो बापदादा के बने हैं उनको बापदादा की पालना देते हुए जल्द से जल्द संपूर्ण बनाएं, संपन्न बनाएं। बापदादा और एडवांस पार्टी वाले हमसे यही चाहते हैं कि हम भी जल्द से जल्द तैयार हो जाएँ तो इस पुरानी सृष्टि का भी परिवर्तन हो जाए। यही आदरणीया दादी जी को सच्चे-सच्चे दिल से श्रद्धांजलि है कि हम जरूर दादी की आशाओं को पूर्ण करेंगे और अपने जीवन के द्वारा अनेक आत्माओं को लाभ देंगे। ■■■

शिव हृदय स्वामिनी : दादी हृदयमोहिनी जी

ब्रह्माकुमार हेमंत भाई, शांतिवन

फरिश्ता रूप, ममतामई दादी गुलजार जी ने माँ बन, मुझ बालक की बुद्धिरूपी अंगुली थाम अध्यात्म पथ पर चलना सिखाया। मीठी-मीठी बातों से हृदयनाथ से हृदय का नाता जोड़ना सिखाया। अनेकों बार प्राणप्यारे प्रभु से मिलन कराया व सच्चा परवाना बनाकर शिवशमा पर फिदा कराया। वे रहनुमा बन जिंदगी के हर मोड़ पर साया बन खड़ी रही। सदा खुशहाल व फरिश्ते की चाल से दादी जी की देह-दुनिया से दूर ले जानी वाली रुहानी अदाएं यही कहती, 'मैं परियों की रानी हूँ, मैं आसमां से आई हूँ..।' सच पूछो तो उनका नहीं था विकारी दुनिया से कोई रिश्ता, वे तो थी ही जन्मजात (बाईबर्थ) एक प्यारा फरिश्ता! कैसी मनमोहक मनोहर छवि, कैसा न्यारा-निराला नूरानी तेज व ओज से दमकता हर्षित मुखमण्डल! आज भी वे परियों की शहजादी सूक्ष्मवतन से, फरिश्ता बनने के मानो अव्यक्त इशारे कर रही हैं।

नौ वर्षीया शोभा का ओमनिवास बोर्डिंग में प्रवेश

दादी जी का दैहिक जन्म कराची में भक्तिभाव से भरे परिवार में 1-7-1926 के शुभदिन हुआ। पिता हासाराम व माता रुकमनी (ससुराल का नाम) ने नाम दिया शोभा। ब्रह्माबाबा उन्हें प्यार से कहते 'गुलजार।' शिवपिता ने दादी जी को अव्यक्त नाम दिया 'हृदयमोहिनी।' एक बार कराची में दादी की लौकिक माँ की मामी ने ब्रह्माबाबा को महान पुरुष जान निमंत्रण दिया। शोभा, दादी आलराउण्डर के साथ मामी के घर गई, वहां सत्संग में जाते ही ट्रांस में गई। सत्संग पूरा हुआ पर वे जागृत अवस्था में न लौटी तो माँ ने जगाया। माँ ने पूछा, 'क्या देखा?' वे कुछ बता न सकी, तब मां ने उन्हें श्रीकृष्ण, श्रीराम आदि के चित्र दिखाये। उन द्वारा दीदार में देखे श्रीकृष्ण की छवि तो उन चित्रों से अति सुंदर थी। इसके बाद उनका ज्ञानमार्ग में पदार्पण हुआ। उन दिनों ब्रह्माबाबा ने सिंध-हैदराबाद में बच्चों के लिए होस्टल खोला था। गीतापाठी मां ने श्रेष्ठ संस्कार देने के लिए नौ वर्षीया शोभा को ओमनिवास बोर्डिंग में प्रवेश दिलाया।

बाबा कहते, चैतन्य ठाकुर

दादी जी को बाबा-मम्मा से राजकुमारी से बढ़कर प्यार-दुलार मिला। बाबा कहते, 'भक्त तो जड़ मूर्तियों को भोग लगाते, आप तो चैतन्य ठाकुर हो, मैं चैतन्य मूर्तियों को खिलाता हूँ।' बाबा स्वहस्तों से बच्चों को गोद में बिठाकर मौसम का पहला फल खिलाते। एक बड़े हॉल में 80 पंलग थे। बच्चों को पेस्ट भी ब्रश में डालकर मिलती। स्नानागार में वस्त्र तैयार होते। रोज रात को मॉलिश होती। श्वेत चादर से सजी शैय्या पर मच्छरदानी लगाई जाती व संभालने वाली बहन टार्च से चैक करती कि कोई मच्छर तो नहीं है? बाबा-मम्मा आकर गुडनाईट करते। मच्छरदानी गिरते ही गीत बजता, 'सो जा राजकुमारी, सो जा..।' सोने से पूर्व बाबा तीन मिनट में सारे दिन का चार्ट चेक कराते। प्रात: 'जाग सजनिया जाग..' इस गीत से जगाते। सुबह दादी चंद्रमणि ड्रिल कराती, साथ ही एक-दूजे को आत्मा देखने का अभ्यास कराती। बाबा स्वयं पाठ लिखते व दादियां पढ़ाती। बाबा के लिखे गीत-कविताएं मिट्ठू दादी मधुर स्वर में गाती। दीदार में देखे दिव्य दृश्यों का बाबा डांस-ड्रामा लिख मंचन कराते। दादी ने तो वो नि:स्वार्थ प्यार भरी पालना पाई, जो राजा-महाराजाओं को नसीब न हो।

दादी के नैनों से पाई परमात्म दृष्टि

इसी बीच हैदराबाद में पवित्रता पर हंगामे, पिकेटिंग हुई। बच्चों के नाम वारंट निकले तो उन्हें घर भेजा। शोभा भी वारंट आने से घर आई। इधर बाबा भी कराची आ गये। दादी आलराउण्डर ने कड़े विरोध का डटकर सामना किया। उन्हें बार-बार लगता कि दान में दी चीज (शोभा) को वापिस नहीं लेना चाहिए। अत: एक साल बाद वे एक

दिन सवेरे-सवेरे शोभा को तांगे में बिठाकर ओमनिवास छोड़ आई। चौदह वर्ष की गहन योगभट्ठी में तपकर दादी कंचन बनी। दादी जी ने ही मुख्य संदेशी बन सूक्ष्मवतन तथा सतयुगी दुनिया के अनेक राज खोले। पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने दादी की आंखें देख वरदान दिया कि ये नैन बहुत सेवा करेंगे। ऐसे ही एक दिन मातेश्वरी जी ने मीठी आवाज सुन कहा कि उनकी मधुर वाणी से सेवा होगी। सचमुच ब्रह्माबाबा अव्यक्त हुए तो दादी हृदयमोहिनी जी के नैनों से असंख्य ब्रह्मावत्स परमात्म दृष्टि पाकर निहाल होते रहे। साथ-साथ पांच स्वर्णिम दशकों तक दादी जी के मुखकमल से ही ईश्वरीय अमृतवचनों का पान कर ईश्-मिलन का पदमापदम सौभाग्य पाते रहे।

दादी का निष्पाप और भोला मन

मुझ आत्मा को दादी जी से मिला अथाह प्यार व पालना अवर्णनीय है। मैं 1990 में मधुबन में समर्पित हुआ। मातेश्वरी भवन में सेवा में उपस्थित था, जहां हमने वेस्ट चीजों से रॉक गार्डन व झरने का निर्माण किया था, जिसमें कुछ मिट्टी की मूर्तियाँ भी सजाई थी। उसे निहारने हेतु दादी जी को सस्नेह निमंत्रण दिया, तो सहज भाव से निमन्त्रण स्वीकार कर दादी जी पधारी। हम भावविभोर हो पुष्पगुच्छ दे स्वागत करने को उत्सुक थे। पर जैसे ही दादी जी कार से नीचे उतरी, तो कुछ आदिवासी बच्चे बगीचे में सजे खिलौनों को देख रहे थे, उनसे दादी आत्मीयता से संवाद करने में मगन हो गई। शायद ही बच्चे नहाये-धोये हों! फटे-पुराने, मैले-कुचैले कपड़े, बिखरे बालों की जटायें, बच्चों की ऐसी अस्वच्छ भावभंगीमा देख कोई भी उनसे दूर भाग जाए। पर दादी जी तन की गंदगी न देख, मन के भोलेपन पर रीझकर मासूमियत से कह रही थी, 'इन्हें (मूर्तियों को) हाथ नहीं लगाना। दूर से ही देखना।' दादीजी का हावभाव व उन बालसुमनों से हृदय का वार्तालाप देख मैं तो अवाक् रह गया! कैसा था निष्पाप मन! कैसा भोलापन था दादी जी का! उनके निर्मल हृदय से स्नेह का झरना झर-झर बह रहा था। दिल सहसा गा उठा, 'ओ मैय्या मोरी, तू मन की अति भोरी...!'

चेतन शिवालय थी दादी

उपरोक्त प्रसंग ने 'स्वयं भगवान दादी जी में क्यों आते हैं?' इस प्रश्न का मुझे उत्तर दिया। दादी जी के निर्मल हृदय ने तो सत्यम् शिवम् सुंदरम् को भी मोह लिया। उनके पावन मनभावन चितवन ने खुदा को भी फिदा करा लिया! उनके पवित्र हृदय कुंज ने सर्वशक्तिवान को भी सम्मोहित कर लिया! दादी जी की सहज सरल बालसुलभ निष्कपटता ने शिवहृदय पर सदा राज किया। दादी जी तो चेतन शिवालय थी। जब-जब भी दादीजी से मिलना होता, तो अनुभव होता, 'स्वयं शिव उनमें विराजमान हैं।' वे चलते-फिरते भी प्रभु मिलन की अनुभूति करा देती थी। सचमुच दादी थी ही शिवप्रिया-शिवभार्या, शिव अनुरागिनी, शिव अर्धांगिनी, शिव हृदय स्वामिनी, दादी हृदयमोहिनी!

विघ्नविनाशक दादी जी

कहते हैं, तूफानों में तोहफे होते हैं। मुझ आत्मा की भी तन-मन की स्थिति की परीक्षाएं चल रही थी। मैं दादी जी के पास दिल्ली, पाण्डव भवन गया। वहां दादी जी के सप्ताह भर के सानिध्य ने अनुभव कराया कि एक मां, बच्चे के साथ खड़ी हो कैसे विघ्नों से पार कराती है। दादी जी रोज दिल का हाल पूछती, कहती, 'हेमंत ये खेल है, पेपर है।' उन शक्तिशाली शब्दों ने पहाड़ को भी राई तो क्या रुई बना दिया। एक दिन दादी मानेसर में गई हुई थी। तो दादी जी के कमरे के बाहर ताज, पुष्पहार, चुन्नी, चंदन का तिलक, फल, चांदी का कटोरा, चम्मच आदि तैयार कर उनका इंतजार कर रहा था। दादी जी आई व मेरे मन की मुराद पूरी की। पाण्डव भवन की कुछ बहनों के समक्ष दादी जी का श्रृंगार किया, तिलक लगाया, चुन्नी ओढ़ाई व चांदी के कटोरे में, चांदी के चम्मच से स्वयं बनाये गाजर के हलवे का भोग भी स्वीकार कराया, तो लगा जैसे दादी बालकृष्ण का मोहिनी रुप धर भावना का भोग स्वीकार कर रही हैं। उस समय दादी सहित कुल आठ आत्माएं विराजमान थी। ये भी कमाल थी कि अष्ट सो ईष्ट दादी ने भविष्य दैवी स्वरुप की झलक दिखाकर, विघ्नविनाशक बन मुझे निर्विघ्न किया, मुझे नवजीवन मिल गया।

दादी जी तो पवित्रता का जीता-जागता चैतन्य दीपस्तंभ थी। उनके शीतल तन-मन से सुख-शांति की तरंगें निकलती रहती थी। जैसे पार्वती ने हिमालय पर तप कर शिव का वरण किया, ऐसे ही पार वतन की अनुगामिनी दादी, महाशिवरात्रि के पावन पर्व की मंगल वेला में शिवशमा पर कुर्बान हो गई। ■■■

दादी जी ने दिल के सब संशय दूर कर दिए

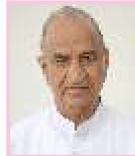

■■■ ब्रह्माकुमार शुभकरण, पांडव भवन, दिल्ली

मैं आदरणीया गुलजार दादी जी से पहली बार सन् 1981 में दिल्ली, पांडव भवन में मिला था। उस समय मैं जलंधर से दिल्ली, लालकिले के मेले की सेवा में आया था। मुझे वहां भंडारे में ही सेवा करने का शुभ अवसर मिला। उस समय दादी गुलजार जी स्वयं ही भंडारे की सेवा की देखभाल कर रहीं थी। मुझे भंडारे में सेवा करने का कोई अनुभव नहीं था मगर प्यारी दादी जी की निर्माणता और उनके मधुर बोल से मेरे दिल में इतना आकर्षण हुआ कि मैं ख़ुशी से भाग-भाग कर सेवा करने लगा और बहुत कुछ मुझे सीखने को मिला।

एक दिन रात को मेले से आये हुए मेहमानों को खाना खिलाते कुछ देर हो गई। दादी जी को भोजन करना था, रोटी बनाने वाली माता ने कहा कि मैं दादी जी के लिए रोटी बनाती हूँ मगर दादी जी ने उस माता को कहा, रोटी नहीं बनाओ, मैं बची हुई रोटी में से ही भोजन कर लूंगी, दादी जी ने वही बची हुई रोटी खायी। मैं दादी जी की सरलता और दिल की मधुरता से इतना प्रभावित हुआ कि मैंने बाबा के कमरे में जाकर, बाबा से यह अर्जी डाली कि भविष्य में पांडव भवन में मुझे सेवा करने का अवसर मिले। प्यारे बापदादा ने मेरी इच्छा पूर्ण की।

1986 में सरकारी नौकरी से मुझे छुट्टी मिल गई। मधुबन से आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे पूछा कि आप दिल्ली, पांडव भवन में बृजमोहन भाई के आफिस में सेवा करोगे? मैंने बड़ी ख़ुशी से सेवा करना स्वीकार कर लिया। आफिस के कार्य के साथ यज्ञ की अन्य कई सेवाएँ करने को कहा गया। अन्य सेवाएँ कुछ ऐसी भी थीं, जिनको मैं हल्का समझता था, मैंने कभी नहीं की थी। मैं कुछ दुविधा में पड़ गया, मैं सीधा गुलजार दादी जी के पास गया और अपना हाल बताया।

दादी जी ने बड़ी नम्रता और बड़े प्यार से कहा कि आप सात दिन हर रोज आधे घंटे के लिए मेरे पास आओ, मैं यज्ञसेवा के महत्त्व और उससे मिली प्राप्तियों की ख़ुशी के बारे में आपको बताऊँगी। मैंने वैसे ही किया और उन्होंने सात दिन के बीच में ही मेरे दिल के सब संशय दूर कर दिए और में दिल से सेवा में लग गया।

एक बार किसी ने मेरे विरुद्ध दादी जी से शिकायत की और दादी जी ने मुझको बुलाया। मैं उनके पास घबराते दिल से गया कि पता नहीं, दादी जी मुझे क्या कहेंगी? मगर मैं हैरान रह गया जब दादी जी ने बड़े प्यार से मेरी गलती सरल शब्दों में बताई और वे अन्दर दिल से एकरस स्थिति में रही। मैंने सोचा, दादी जी भोली हैं, मैं और ही अपनी चतुराई दिखाने लगा। दादी जी साक्षी होकर सुनती रहीं। जब मैं उठकर जाने लगा तब दादी जी मुस्करायी। अब मैं समझ गया कि दादी जी अन्दर से जागती ज्योति हैं और सब कुछ समझती हैं। मैंने अपनी गलती दिल ही दिल में स्वीकार कर ली। दादी जी के गुणों की महिमा इतनी है कि मैं वर्णन करने में असमर्थ हूँ। उनका कहना था कि आप सबको ए-वन में पास होना है और सदा खुश रहकर अपने खुशनुमा चेहरे से प्यारे बाबा को प्रत्यक्ष करना है। ■■■

सदस्यता शुल्क :

(भारत) वार्षिक : 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank** : State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :
E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

अयोध्या- राजा दशरथ राजमहल के महंत बिंदु गद्याचार्य देवेंद्र प्रसाद आचार्य जी, रामकोर्ट अयोध्या को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रामाकृष्णा भाई।

रानी- नवनिर्मित आत्मज्योति भवन की नामपट्टिका का अनावरण करने के बाद रामस्नेही संत हरिराम शास्त्री जी, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. सोनू भवन, ब्र.कु. अस्मिता भवन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में।

नवापारा-राजिम- छत्तीसगढ़ विधानसभाध्यक्ष डॉक्टर चरणदास महंत जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन व ब्र.कु. नारायण भाई।

मोहाली- शिव जयंती कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पंजाब के स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और श्रममंत्री भ्राता बलबीर सिंह सिद्धू, ब्र.कु. प्रेमलता बहन, ब्र.कु. रमा बहन, आईएएस भ्राता धर्मपाल गुप्ता तथा अन्य।

वाराणसी (श्रीराम नगर कॉलोनी)- शिव ध्वजारोहण करते हुए उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री भ्राता अनिल राजभर, ब्र.कु. सरोज बहन, भ्राता ओ. एन. उपाध्याय तथा अन्य।

पन्ना- संतृप्त खुशहाल जीवन वार्षिक अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. सीता बहन, मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री भ्राता बृजेंद्र प्रताप सिंह, बहन आशा गुप्ता, बहन मंजू जैन तथा भ्राता बाबूलाल यादव।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2021-2023 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2021-2023. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : May, 2021.

शिमला-
हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल भ्राता बंडारू दतात्रेय जी को ईश्वरीय प्रसाद देती हुई ब्र.कु. सुषमा बहन। साथ में ब्र.कु. प्रकाश भाई, ब्र.कु. रेवादास भाई तथा अन्य।

पटना (कंकड़बाग)-
महाशिवरात्रि कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. संगीता बहन, बिहार के मुख्यमंत्री भ्राता नीतीश कुमार, भवन निर्माण मंत्री भ्राता अशोक चौधरी, डॉ. बनारसी लाल शाह, ब्र.कु. रुकमणी बहन तथा अन्य।

रायपुर (शांति सरोवर)-
महाशिवरात्रि पर आयोजित द्वादश ज्योतिर्लिंग झांकी का शुभारंभ करते हुए विधानसभा अध्यक्ष भ्राता चरणदास महंत, शिक्षामंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम, संसदीय सचिव बहन रश्मि देवी सिंह, विधायक भ्राता शैलेश पांडे, ब्र.कु. कमला बहन तथा ब्र.कु. सविता बहन।

If undelivered, please return to Gyanamrit Bhawan, Shantivan, Abu Road, Sirohi-307510